चन्दामामा
मार्च १९९२
Vapa
4
Rs.

जीवन में भर लो रंग
डायमण्ड कामिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें
और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

मिलें, क्लब के अन्य सदस्यों से!
चाचा चौधरी, मोटू पतलू, बाब पिंकी बिल्लू, ताऊजी, फौलादी सिंह, चन्नी चाची, दाबू, महाबली शाका, चाचा भतीजा, राजन इकबाल, जेम्स बाड, फैंटम, मैन्ड्रक.... और कई अन्य मशहूर पात्र।

इन सब पात्रों से मिलाने का श्रेय 'डायमण्ड कॉमिक्स' को है जो देश में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स हैं और हर महीने अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बंगाली और मराठी भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं।

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!
आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टाल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

मुफ्त उपहार!
'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बनने पर आपको पहली वी.पी. में 'चिल्ड्रन जोक्स' नामक पुस्तक उपहार स्वरूप मुफ्त भेजी जाएगी तथा आपके जन्मदिन पर एक विशेष उपहार भी मुफ्त भेजा जाएगा। समय-समय पर अन्य उपहार भी आपको मिलते रहेंगे।

डाक खर्च माफ!
'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाने पर आपको हर महीने वी.पी. से घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स प्राप्त होते रहेंगे। कहीं आने-जाने की भी जरूरत नहीं। जो डाकिया आपका कॉमिक्स पैकेट लेकर आएगा, आपने केवल उसे कॉमिक्स का मूल्य ही देना है। डाक खर्च भी आपको नहीं देना पड़ेगा।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!
आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनिआर्डर के रूप में भेज दें।

सदस्य बनने पर हर महीने आपको 3/- रु. की बचत वी.पी. पर और 7/- रु. की बचत डाक खर्च पर होगी। यानी आपको 10/- रु. की बचत और 12 वी.पी. लगातार छुड़वाने पर आपको 12/- रु. मूल्य की एक डाइजेस्ट उपहार स्वरूप मुफ्त मिलेगी।

अपने मित्रों को सदस्य बनाएं, इनाम पाएं!
यदि आप अपने चार मित्रों के नाम पते व सदस्य शुल्क (10/- रु. प्रत्येक सदस्य) भिजवायेंगे तो आपको उपहार स्वरूप 12/- की एक डाइजेस्ट मुफ्त दी जाएगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ______________________

पता ______________________

____

डाकघर ____________ जिला ____________ पिनकोड ________

सदस्यता शुल्क 10 - रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्मदिन ______________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

पजल पैक
चार पुस्तकों का दूसरा सैट

(आपके मस्तिष्क को विकसित और बुद्धि को पैना करने की नियमत कोशिश में। दिलचस्प और उपयोगी सामग्री से लबालब भरा अपनी तरह का एकदम अनुपम संग्रह)
अब प्रस्तुत है, प्रथम सैट की शानदार सफलता के बाद पजल पैक का दूसरा सैट (नं. 5 से 8)
जल्दी कीजिए! आज ही अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या हमें लिखें। प्रत्येक का मूल्य : रु 5/-

डायमण्ड कामिक्स
पेश करते हैं

नये डायमण्ड कामिक्स

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि., 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Don't you owe the
See my tail
It's out of a
Fairy Tale
Nice 'n' funny
I'm a Bunny
Foxy is my name
But I'm oh-so tame
Your Bear Hugs
are warmer
than mine

little one a cuddles?
I can't chase no mice But I'm soft 'n' nice
Give the Li'l Panda a Handa
No carrots to eat But I'm a treat
u hug me tight
I'll give you
ride
The CHANDAMAMA
Collection of Soft Toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX
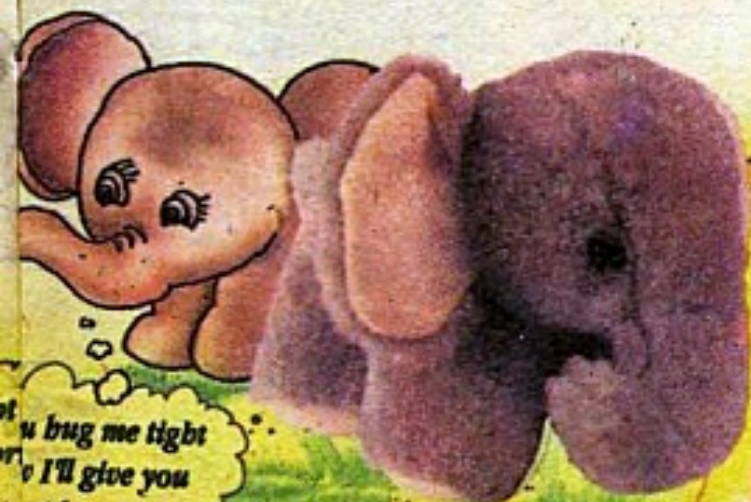
मार्च १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

उत्कृष्टता ईश्वर है

"ईश्वर ने मानव को अपनी ही तरह का बनाया है," हमारे धर्मग्रंथों का कहना है। वैज्ञानिक, दार्शनिक और बुद्धिजीवी सब इस बात पर हमेशा अचंभा करते रहे हैं कि ईश्वर की रचना, यानी मानव कितना निर्दोष है। सबसे ज़्यादा चक्कर में डालने वाला अंग है-मस्तिष्क! यह कैसे काम करता है, आज तक इसकी गुत्थी सुलझी नहीं।

ईश्वर मानव को उतना ही निर्दोष देखना चाहता है जितना कि वह स्वयं है। बंबई के एक वरिष्ठ पत्रकार ने पारसी युवा श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा: "उत्कृष्टता ही ईश्वर है, जहाँ उत्कृष्टता है वहाँ ईश्वर है।"

उत्कृष्ट होने की प्रक्रिया बचपन से ही शुरू होती है। पहले मां-बाप के माध्यम से, फिर शिक्षकों के माध्यम से, फिर शिक्षा के माध्यम से, फिर उन पुस्तकों के माध्यम से जिन्हें हम पढ़ते हैं, फिर मित्रों के माध्यम से और अंत में समाज के माध्यम से जिसके कि हम अंग बन जाते हैं।

इस समूची प्रक्रिया का उद्देश्य है हमारे भीतर अच्छे विचार जगाना, हमें अच्छे शब्द कहने के लिए प्रेरित करना और हमसे अच्छे कार्य करवाना। इससे हम उत्कृष्टता के पथ पर अग्रसर होते हैं।

किंतु उत्कृष्टता की एक विशिष्टता भी है। यानी इसकी कोई सीमा नहीं। सर्जी बुबका का उदाहरण लें। बांस की मदद से यह ऊंची से ऊंची छलांग लगाता है, और अपने पिछले कीर्तिमान को पार कर जाता है। अपने क्षेत्र में यह महान् है। पर उसका कहना है कि वह संतुष्ट नहीं है, क्योंकि हर कीर्तिमान को लांघने की हमेशा गुंजाइश रहती है।

यह है वह भावना जो हर किसी में होनी चाहिए। अपनी सफलता पर कभी भी रुको नहीं। स्वामी विवेकानंद हमेशा यही कहते थे: "मेहनत करो, और मेहनत करो।" क्या हम कह सकते हैं कि प्रयास ही उत्कृष्टता की जड़ में है?

वर्ष : ४४ मार्च १९९२ अंक : ७

एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-
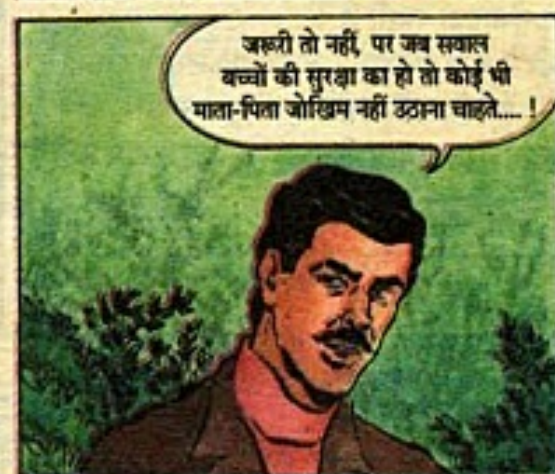
६९ वर्षीय मिस्र के भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री बूत्रोस ग़ाली नव वर्ष के दिवस पर पेरेज़ द कूइआ के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बने । यह पद संसार में संभवतया सबसे अधिक स्पृहणीय गैर-सैनिक पद है । दूसरे शब्दों में, महासचिव को इस विश्व संस्था का "सुपरमैन" यानी "अतिमानव" कहा जाता है, और साथ ही उसे विश्व राजनीति में आयी उलझनों को दूर करनेवाला सम्मानित व्यक्ति माना जाता है ।

संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् ने श्री ग़ाली का एकमत से चुनाव किया और बाद में महासभा ने उसे अपना अनुमोदन प्रदान किया ।

जिन दिनों श्री ग़ाली पर मिस्र के विदेशी मामलों की ज़िम्मेदारी थी, उन दिनों वह मिस्र और इज़राइल के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण क़रार करवाने में सफल हुए । यह बात १९७९ की है । इस क़रार को कैंप डेविड क़रार कहा जाता है । इसकी बदौलत दो देशों के बीच मुद्दत से चले आ रहे संघर्ष का अंत हुआ । हाल ही में उन्होंने एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । उन्होंने सभी अरब देशों को एकजुट किया और इराक के कुवैत पर हमले की भरपूर निंदा की । काम तो उन्होंने और भी अनेक किये, पर इन दो के कारण उन्हें संसार के राजपुरुषों के बीच अत्यधिक प्रतिष्ठा मिली ।

श्री ग़ाली से पहले महासचिव पद को सुशोभित करने वालों के नाम इस प्रकार हैं: ट्रिग्वी ली (पोलैंड-१९४६-५२) डाग हैमरशोल्ड (स्वीडन-१९५३-६१), यू थांट (बर्मा, अब म्यांमार-१९६१-७१), डॉ. कुर्त्त वाल्डाइम (आस्ट्रिया-१९७२-८१) तथा पेरेज़ द कुइया (पेरू-१९८२-९१)।

श्री ग़ाली संयुक्त राष्ट्र के छठे महासचिव हैं। वह अपना पद इस समय संभाल रहे हैं जबकि इस संस्था पर संसार के दो नाजुक क्षेत्रों में शांति बनाये रखने की ज़िम्मेदारी आयी हुई है। पहला क्षेत्र है कंपूचिया, जहाँ आपस में युद्ध कर रहे गुटों ने अपनी २०-वर्ष पुरानी दुश्मनी और होड़ खत्म करके अंतरिम सर्वोच्च राष्ट्रीय परिषद् का गठन किया है ताकि चुनाव करवाये जा सकें और सही मानों में जनतांत्रिक सरकार अस्तित्व में आये। दूसरा क्षेत्र यूगोस्लाविया है जहाँ स्लोवेनिया और क्रोशिया जैसे गणतंत्रों ने परिसंघ से मुक्त होने की घोषणा कर दी है, और पिछले छः महीनों से आपस में लड़-लड़कर हलकान हो रहे हैं। यह नहीं कि इनके आपसी समझौते के लिए कोशिशें नहीं हुईं-यूरोपीय समुदाय के अलावा अमरीका तथा भूतपूर्व सोवियत यूनियन ने भी खूब कोशिश की है। बहरहाल, इन दो क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र की शांति सेनाएं पहले से ही पहुंची हुई हैं।

संयुक्त राष्ट्र तो क्षेत्रीय विवादों में हस्तक्षेप करने और शांति बनाये रखने के प्रयासों में व्यस्त रहेगा, पर नये महासचिव को अपना ध्यान संयुक्तराष्ट्र की संरचना और उसकी नीतियों में फेर-बदल करने की पुरानी मांगों पर केंद्रित करना होगा। एक परिवर्तन यह सुझाया जा रहा है कि सुरक्षा परिषद् को विस्तार दिया जाये और उसमें जर्मनी तथा जापान को स्थायी सदस्यों के रूप में शामिल किया जाये। इधर इन्हीं दिनों, पैट्रिक मोइनीहन ने, जो भारत में अमरीका के राजदूत थे, अपनी राय देते हुए कहा है कि भारत को भी इस परिषद् में स्थायी सदस्य के रूप में स्थान मिलना चाहिए।

जिस समय श्री ग़ाली को उनके चुनाव के बारे में बताया गया, उन्होंने कहा, "यह मेरे लिए और मेरे देश के लिए सम्मान की बात है। मुझे विश्वात है कि संयुक्त राष्ट्र संसार में हो रहे उनके परिवर्त्तनों में अपनी भूमिका निभायेगा, और मुझ से जो अच्छे से अच्छा बन पड़ेगा, करूंगा।"

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना १९४५ में हुई थी। उस समय इसके सदस्यों की संख्या ५१ थी। पिछले वर्ष सितंबर माह में, जब इसमें तीन स्वतंत्र बाल्टिक राज्य-एस्टोनिया, लैटविया तथा लिथूआनिया, दो कोरियाई देश—उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया, तथा दो प्रशांत टापू-राष्ट्र—माइक्रोनेशिया और मार्शल आईलैंड—शामिल हुए तो यह संख्या १६६ हो गयी।
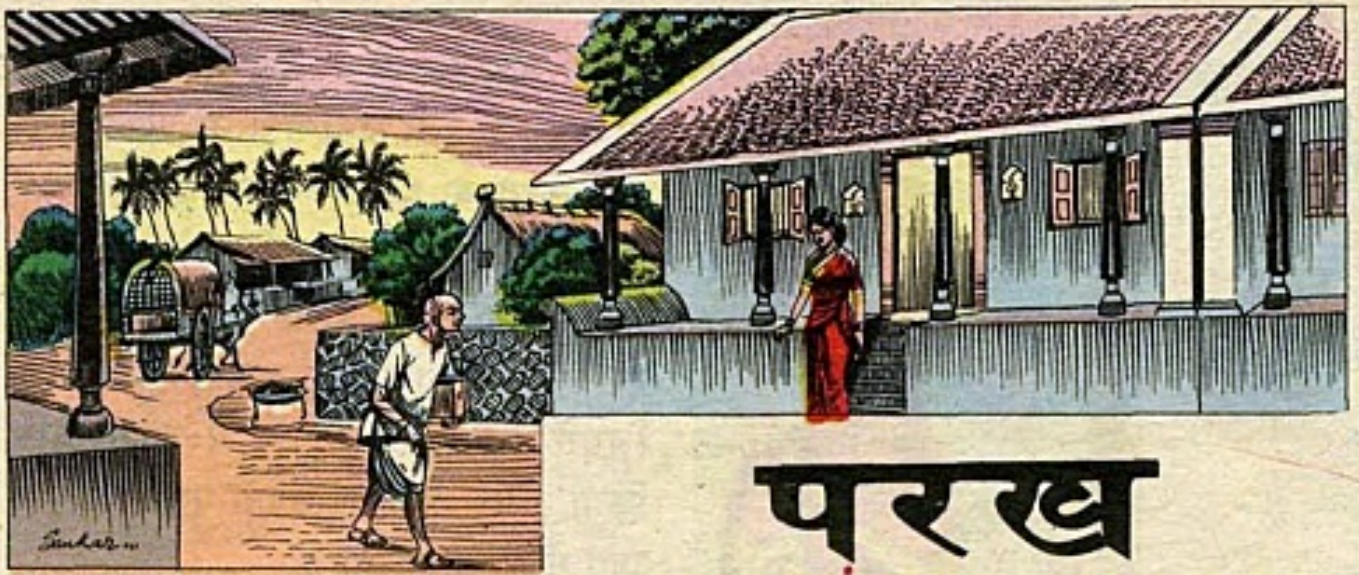
परख

पालमपुरी की कचहरी में प्रकाश की छोटी-सी नौकरी थी। एक दिन कचहरी के काम से उसे पड़ोस के गांव में जाना पड़ा। प्रकाश की पत्नी जानकी थी।

शाम को जानकी ने देखा कि कोई बूढ़ा व्यक्ति उसी के घर की ओर चला आ रहा है। उसके हाथ में एक बड़ा-सा बक्सा था। वह एक भाड़े की गाड़ी से उतरा था और गाड़ीवाला बुरी तरह से उस पर चिल्ला रहा था, "बात तय हुई थी शहर चलने की। लेकिन तुम जो यहीं गांव में रुक रहे हो!"

"तुम्हें इससे क्या मतलब?" बूढ़े ने पलट कर उत्तर दिया था, "तुम्हें अपने किराये से मतलब होना चाहिए। मैंने तुम्हारा समूचा किराया चुकता कर दिया है। मैं अब यहीं रुकूंगा। यहां मेरा छोटा भाई रहता है।"

बूढ़े को जानकी ने पहले कभी देखा नहीं था। इसलिए जब वह उसके घर के दरवाज़े तक पहुंच गया तो उसने आश्चर्य जताते हुए उससे पूछा, "आप कौन हैं? किसका घर ढूंढ़ रहे हैं?"

"पहले मुझे थोड़ा पानी पिलाओ, बेटी," बूढ़े ने अपना दम साधते हुए कहा।

जानकी गिलास में पानी ले आयी और बूढ़ा पानी पीकर बोला, "मैं नहीं जानता कि यह घर किसका है। बस, मैं यह रात यहां बिताना चाहता हूं। थोड़ी-सी जगह मिल जाती तो मैं आराम कर लेता। सुबह होते ही मैं अपनी राह चला जाऊंगा।"

बूढ़े की बात सुनकर जानकी ने उसकी ओर परखती निगाहों से देखा, और जब उसे लगा कि वह बिलकुल निरापद व्यक्ति है, तो थोड़ी सावधानी से बोली, "आप यहां रात बिताना चहते हैं तो मुझे कोई एतराज़ नहीं। पर लगता है आप कुछ घबराये हुए से हैं।"

उसके तीन बेटे थे। उन तीनों की शादी हो चुकी थी। वे खेतीबाड़ी को ज़्यादा पसंद नहीं करते थे, बल्कि व्यापार करना चाहते थे। उनके कहने पर नीलकंठ ने अपनी तमाम ज़मीन बेच डाली। वह साठ एकड़ के करीब थी। उससे काफी रकम मिली जिससे उसके बेटों ने शहर में व्यापार शुरू किया। पर नीलकंठ अपनी पत्नी के साथ गांव में ही रहता रहा।

''काफी समय ऐसे ही बीत गया। फिर अचानक उसकी पत्नी का देहांत हो गया। यह घटना छः महीने पहले की है। अब नीलंकठ भी अपने बेटों के साथ शहर जा रहा थ। लेकिन गाड़ी वाले का व्यवहार उसे कुछ संदेहास्पद लगा। गाड़ी बड़ी धीमी चाल से चल रही थी। अब तक तो उसे कब का शहर पहुंच जाना चाहिए था। लेकिन वह तो मुश्किल से अभी इसी गांव में ही पहुंची थी। नीलकंठ को इतने ढेर सारे गहनों के साथ रात में सफर करना खतरे से खाली नहीं लगा। इसीलिए उसने रिश्तेदार वाली कहानी गढ़कर गाड़ी वाले से पीछा छुड़ाया और यहीं इसी गांव में रुक गया। वह बूढ़ा मैं ही हूं बेटी।''

''बेशक, मैं घबराया हुआ हूं।'' बूढ़े ने निस्संकोच उत्तर दिया, ''मेरी घबराहट का कारण मेरा यह बक्सा है।'' और उसने वह बक्सा खोलकर जानकी को दिखाया।

बक्सा गहनों से भरा हुआ था। उसमें एक बड़ी सी करधनी भी थी। बूढ़े ने वह करधनी जानकी को दिखाते हुए कहा, ''जानती ही यह कितने तोले की है? साठ तोले की।'' और यह कहकर उसने उस करधनी को वापस बक्से में रख दिया और बक्से को बंद कर दिया।

जानकी यह सब आश्चर्य-चकित हुई देखती रही। उसके आश्चर्य को भांपते हुए बूढ़ा बोला, ''एक बूढ़ा था। उसका नाम नीलकंठ था। वह एक तगड़ा किसान था।

''आपने बहुत अच्छा किया,'' जानकी बोली, ''चलिए, हाथ-मुंह धोकर खाना खा लीजिए। मैं अभी परोसे देती हूं।'' और यह कहकर जानकी रसोई घर में चली गयी।

भोजन कर लेने के बाद बातों-बातों में नीलकंठ ने कहा, ''सुबह जब मैं शहर

पहुंचूंगा तो मुझे एक समस्या का सामना करना होगा ।"

"वह कैसी समस्या है?" जानकी ने कौतूहल दिखते हुए कहा ।

"मेरे पास कुल सौ तोले के ज़ेवर हैं । यह करधनी ही साठ तोले की है । यह मैंने अपनी पत्नी को हमारे विवाह की पहली वर्षगांठ पर दी थी । मैं इसे तुड़वाना नहीं चाहता, लेकिन यह भी मुझे न्यायसंगत नहीं लग रहा कि एक बहू को साठ तोले सोना दूं और बाकी दो को बीस-बीस तोले । यही मेरी समस्या है ।" नीलकंठ ने कहा ।

"यदि बाकी दो बहुओं को चालीस-चालीस तोले सोना कम मिलता है, तो उन्हें उस सोने की कीमत के बराबर नकद पैसा दे दीजिए ।" जानकी ने नीलकंठ को सुझाव दिया ।

जानकी की बात सुनकर नीलकंठ ज़ोर से हंसा और बोला, "खेत और घर बेचने से जो रकम मुझे मिली थी, वह मैंने पहले ही अपने बेटों में बराबर-बराबर बांट दी थी । अब मेरे पास यह सोना ही बचा है । इसे भी तीनों में बराबर-बराबर बांट देता तो संतोष पा जाता । तब मुझे किसी प्रकार की चिंता न होती ।"

जानकी थोड़ी देर तक सोचती रही और फिर बोली, "तब तो यह करधनी आपको अपनी उसी बहू को देनी चाहिए जो आपसे सबसे ज्यादा स्नेह करती है ।"

"मेरी तीनों बहुएं मुझे बहुत स्नेह और

सम्मान देती हैं । इसीलिए मुझे किसी भी निर्णय पर पहुंचने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है ।" नीलकंठ ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा ।

"क्या आपकी बहुएं जानती हैं कि आप उस साठ तोले वाली करधनी का रूप बिगाड़ना नहीं चाहते और आप उसे उनमें से किसी एक को ही दे सकते हैं?" जानकी ने प्रश्न किया ।

"हां, बेशक, वे जानती हैं । मैं उनसे यही कहकर आया था कि मैं गांव से सोना लाने जा रहा हूं ।" नीलकंठ ने उत्तर दिया ।

जानकी फिर थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही और बोली, "आप घबराइए नहीं । मुझे छोटा-सा एक नाटक करना होगा । मैं

आसानी से इस बात का पता लगा लूंगी कि आप की तीन बहुओं में से कौन आपको अधिक चाहती है और कौन आपको अधिक सम्मान देती है । पर इसके लिए आपको वही करना होगा, जो मैं आपसे कहूंगी ।''

''मुझे तो समस्या का हल चाहिए ताकि मैं निश्चिंत होकर अपना बाकी का समय बिता सकूं । इसलिए तुम जो कहोगी, मैं करूंगा ।'' नीलकंठ ने अपनी सहमति दे दी ।

सुबह होते ही जानकी ने नीलकंठ से कुछ कागज़ात पर हस्ताक्षर करवा लिये । फिर उसने गांव के एक व्यक्ति को नीलकंठ के बेटों के घर भेजा और बहुओं को यह खबर भिजवायी कि उनके ससुर ने केवल उन्हीं को बुलवा भेजा है ।

दोपहर तक नीलकंठ की तीनों बहुएं जानकी के घर पहुंच चुकी थीं । वे जैसे ही गाड़ी से उतरीं, जानकी ने उन्हें देख लिया और नीलकंठ को भीतर के कमरे में लिवा ले गयी । वहां उसने उसे एक खाट पर लेट जाने को कहा और फिर उसे चादर से ढकते हुए बोली, ''अब आप ज़िंदा नहीं हैं । आप ऐसे पड़े रहिए जैसे कि आप मर चुके हैं । फिर आप स्वयं अपने कानों से सुनिए कि यहां क्या-क्या घटता है । यह आपकी बहुओं की परीक्षा है ।''

नीलकंठ को भीतर के कमरे में लिटा आने के बाद जानकी फिर बाहर के कमरे में चली आयी । उसके हाथ में नीलकंठ द्वारा हस्ताक्षरित कागज़ात भी थे ।

उसे देखते ही नीलकंठ की बहुओं ने प्रश्न किया, ''आप कौन हैं? कल हमारे ससुर शहर आने वाले थे । वह यहां क्यों रुक गये?'' फिर वे तीनों कमरे में चली आयीं ।

जानकी ने तीनों बहुओं के चेहरों पर अपनी नज़र दौड़ायी और बोली, ''मेरे पति कचहरी में वकील हैं । नीलकंठ जी ने उनसे बात करके अपना सारा सोना शहर के एक वृद्धाश्रम को दान के रूप में दे दिया है । इसी सिलसिले में वह यहां रुके थे । फिर जानकी ने अपने हाथ के कागज़ात उन तीनों बहुओं को दिखाये ।

जानकी की बात सुनते ही उन बहुओं के चेहरे फक पड़ गये ।

''ओह! इतना अन्याय!'' उन तीनों बहुओं

के मुंह से एकसाथ निकला । "अब वह काहां हैं?"

"वह अब भीतर के कमरे में हैं, लेकिन आपके प्रश्नों का उत्तर अब वह नहीं दे सकते । आज सुबह ही अचानक उनके प्राण-पखेरू उड़ गये । शायद उनके हृदय की गति रुक गयी थी ।" जानकी का स्वर इतना गंभीर था कि उससे कहीं संदेह नहीं झलकता था ।

तीनों बहुएं अब भीतर के कमरे में गयीं । खाट पर पड़े हुए अपने ससुर को देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि वह चल बसा ।

"क्या-क्या नहीं किया मैंने इस बूढ़े के लिए ।" नीलकंठ की बड़ी बहू घृणा से बोली, "मैं इसे तीन जून गरम खाना खिलाती रही । अगर मुझे पता होता कि यह ऐसा करने वाला है तो मैं इसे भूखों मार देती ।"

दूसरी बहू को भी उतना ही गुस्सा था । वह अपने दांत पीसते हुए बोली, "मैं अपनी नींद हराम करके इसे वक्त पर दवाइयां खिलाती थी और हमेशा इसकी सेवा में जुटी रहती थी । अगर मुझे ज़रा-सी भी भनक मिल जाती कि यह ऐसी हरकत करेगा तो दवाई के बदले इसे मैं विष दे देती ।"

तीसरी और छोटी बहू भी बड़ी बहुओं की तरह ताव में थी । कहने लगी, "मैं रोज़ देर रात तक इसे पुराण सुनाकर अपना वक्त बरबाद करती रही । कभी-कभी तो मेरा गला रुंधने को हो आता । मैं अपने हाथ से ही पंखा करती । मैं नहीं जानती थी कि

यह निगोड़ा ऐसा धोखेबाज निकलेगा, वरना मैं कभी की, किसी अंधेरी रात में, लाठी से इसका सर कुचल चुकी होती, जिससे कब का यह अपनी आंखें बंद कर चुका होता ।"

इसके बाद तीनों बहुओं ने जानकी की ओर आंखें तरेरते हुए कहा, "कभी ऐसे बूढ़े पागलपन में भी ऐसी हरकतें कर बैठते हैं । क्या तुम इसे रोक नहीं सकती थी? इधर-उधर की कुछ हांककर इसे बहका दिया होता । बूढ़ा मरा था तो इसके बेटों को खबर भेजी होती । हमें बुलाने की क्या ज़रूरत थी? अब इस लाश को यहीं, अपने घर पर रखो । हम शाम को इसके बेटों को भेजेंगी ।" और बौखलायी हुई-सी वे

धमाधम अपनी गाड़ी की ओर बढ़ीं और वहां से चली गयीं ।

अपनी बहुओं की बातें नीलकंठ सुन चुका था । उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था । उनका असली रूप देखकर वह सनसना गया । उसका दुःख समेटे सिमट नहीं रहा था ।

जानकी उसे अपना सगा मानकर सांत्वना देते हुए बोली, ''बाबा, आपने देख लिया न, मानव-स्वभाव कैसा विचित्र है । इसलिए बुढ़ापे के लिए आपको अपने पास थोड़ा-बहुत ज़रूर रख छोड़ना चाहिए । आपकी बहुओं ने साठ तोले की करधनी के लिए ही आपके प्रति इतना स्नेह जताया था । अब आप अपने पास धन ज़रूर रख लें । मेरे पिताजी ने भी आपकी तरह अपना सब कुछ बेटों के नाम कर दिया था, और जब उन्हें वहां भरपेट खाने को भी न मिला तो वह लाचार हो गये । वह अपनी बेटियों के यहां रहना नहीं चाहते थे । इसलिए अब यहां एक वृद्धाश्रम में रहते हैं । आपको ऐसी स्थिति का सामना न करना पड़े, इसीलिए मैंने ऐसा नाटक रचा । मैं आपको आपकी बहुओं का असली रूप दिखाना चाहती थी । मेरे पिताजी काफी अनुभवी हैं । अगर उनकी हालत ठीक होती तो वह ज़रूर अपनी सालाह से हमारी मदद करते ।खैर, मैं यही चाहती हूं कि आप हमेशा ऐसी स्थिति में रहें जिससे आप अपने परिवार की मदद करते रहें ।'' और यह कहकर जानकी उन कागजात को फाड़ने को हुई ।

पर नीलकंठ ने उसे रोक लिया और कहने लगा, ''नहीं बेटी, ये कागज़ात मत फाड़ो । मैं सचमुच यह सोना वृद्धाश्रम को दान के रूप में देने जा रहा हूं । मैं अपने बाकी के दिन वहीं बिताऊंगा । मेरी पत्नी की करधनी ने मेरी आंखें खोल दी हैं । मुझे तुम उस वृद्धाश्रम का पता बताओ ।''

नीलकंठ की बात सुनकर जानकी की आंखों में पानी भर आया । उसे लगा जैसे वह अपने पिता को देख रही है ।

अपूर्व के पराक्रम

१२

[अपूर्व अब जवान हो गया है, लेकिन अपने कद-काठ में वह पहले की तरह नन्हा-सा ही है । उसे पता चल गया है कि तांत्रिक, राजा के मुख्य मंत्री की मदद से चंद्रप्रकाश हीरे को, जिसे युवरानी पहने हुए है, अपने कब्ज़े में लेने की सोच रहा है । उधर तांत्रिक की गुरु, जो कि एक बूढ़ी डायन है, युवरानी को अपने पास बुलाना चाह रही है ताकि वह उसका यौवन चूसकर अपने शरीर में उतार ले ।—अब आगे पढ़ो ।]

राज्य के लिए यह बहुत ही अच्छा समय रहा । वर्षा काफी अच्छी हुई जिससे समूची भूमि पर भरपूर फसल होने से खुशहाली आ गयी । इस से राजा विश्ववर्मा काफी खुश था और उस ने अपनी बेटी का जन्म दिन बड़ी शानो-शौकत से मनाने का फैसला किया ।

इसके बारे में उसने अपने मुख्य मंत्री को बुलाकर, बड़ी उमंग के साथ उस से काफी देर तक बात की ।

मुख्य मंत्री तो यह चाहता ही था । उसने इसके लिए पहले की अपेक्षा कहीं ज़्यादा जोश दिखाया ।

राजा को लगा कि मुख्य मंत्री को उसकी बेटी से बहुत स्नेह है चूंकि मुख्य मंत्री के मन में मंडरानेवाले कुटिल विचारों से वह बिलकुल अनभिज्ञ था, और इसीलिए वह बहुत खुश हुआ ।

उस रात वर्षा हो रही थी । रात काली अँधियारी थी ।
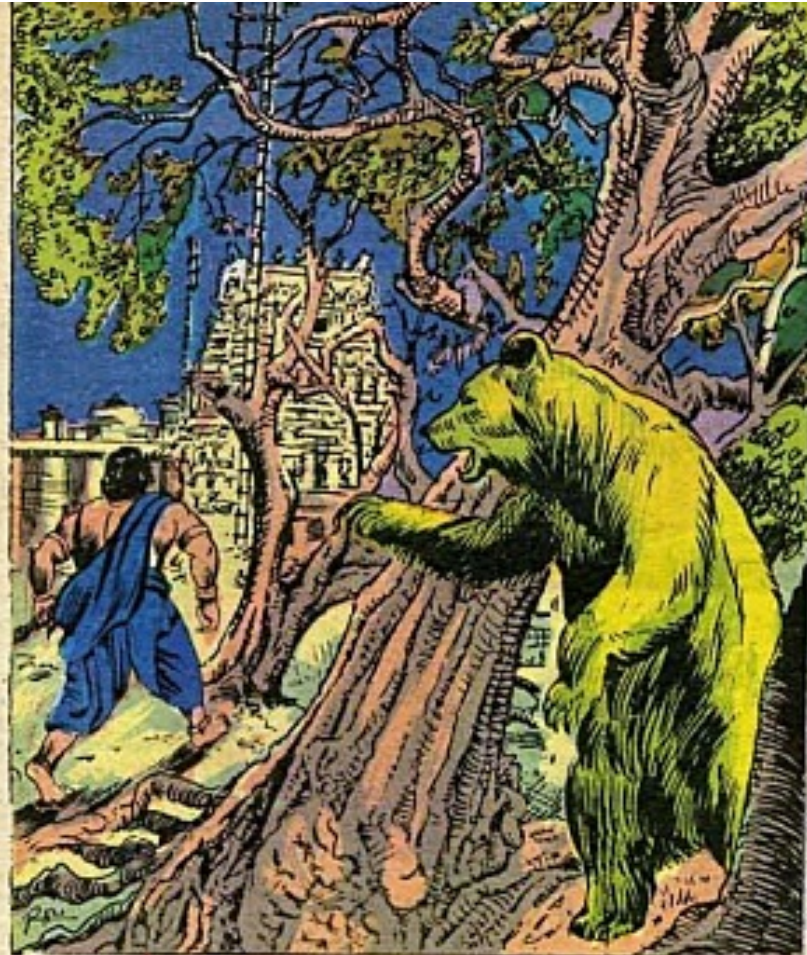
उस काली रात की तरह ही कोई काला व्यक्ति उस अंधेरे में मां दुर्गा के मंदिर की ओर बढ़ रहा था। वह मंदिर रुद्रपुर नगर से थोड़ा हटकर था।

मां दुर्गा राजा की न केवल कुटुंब देवी थी, बल्कि समूचे राज्य की अधिष्ठात्री देवी भी थी।

मंदिर एक सुनसान जगह पर स्थित था। इसलिए रात के समय वहां कोई नहीं रुकता था। इस का एक कारण यह भी था कि उसके पीछे एक लंबा-चौड़ा जंगल था। आधा जंगल रुद्रपुर राज्य में था, बाकी का आधा रूपकुंज राज्य में पड़ता था। रुद्रपुर राज्य में पड़ने वाले जंगल पर राजा विश्ववर्मा का अधिकार था।

मंदिर चाहे रात को सुनसान रहे, वहां दीप जलते ही रहते थे। मंदिर का पुजारी शाम को जल्दी जल्दी दीप जलाकर मंदिर में मां दुर्गा की पूजा-अर्चना किया करता और रात घिर आने से पहले ही वह वापस नगर को लौट जाता।

जो व्यक्ति उस काली रात में काले लिबासों में रहकर जल्दी-जल्दी उस मंदिर की ओर बढ़ रहा था, वह मंदिर के पीछे लगभग सौ गज़ की दूरी पर एक बरगद के पेड़ के नीचे रुक गया।

वहां से जंगल बिलकुल नज़दीक था। वह व्यक्ति अपने वाहन से उतरा था। उसका वाहन जानते हो, क्या था? एक बहुत बड़ा भालू जिसे उस ने अपनी ताकत से अपने अधीन में कर रखा था।

"यहीं रुको और मेरा इंतजार करो।" उस व्यक्ति ने उस निस्सहाय जीव भालू को आदेश दिया।

वह जीव बुरी तरह कांप रहा था। जाहिर था कि वह जीव अपने मालिक से बुरी तरह डरा हुआ था।

वह व्यक्ति अब मंदिर की एक विशेष मेहराब की ओर बढ़ा। वहां कोई उसका इंतज़ार कर रहा था।

"मुझे अफसोस है कि मैंने आपको इतनी देर तक इंतज़ार करवाया। मैं डायन के पास फिर गया था। उसने आपके लिए एक तावीज़ दिया है। उस तावीज से उसने आपके लिए ही विशेष मंत्रविधि से बनाया था।

उसने कहा था कि उससे आपकी हिम्मत बंधेगी । वह आपकी हर संकट से रक्षा भी करेगा ।" इस तरह कहनेवाला और कोई नहीं, वीरविकट तांत्रिक ही था ।

"मैं उस पवित्र आत्मा के प्रति आभारी हूं," वहां इंतज़ार कर रहे व्यक्ति ने कहा । वह मुख्य मंत्री था ।

अपूर्व बहुत पहले से वहां उपस्थित था । उस ने उन दोनों दुष्ट षड्यंत्रकारियों को साफ पहचान लिया था और वह उन की चालें पहचानने के मकसद से ही उन का पीछा कर रहा था ।

डायन के प्रति मुख्यमंत्री द्वारा 'पवित्र आत्मा' शब्द का प्रयोग किये जाते हुए देखकर अपूर्व एकदम चौंक गया । उस ने सोचा कि 'पवित्र' शब्द का ऐसा प्रयोग उसे अपवित्र करने के ही समान होता है ।

अपूर्व उन दोनों को, छिपकर अपलक देख-परख रहा था ।

तांत्रिक ने वह तावीज़ मुख्य मंत्री के बाजू पर बांध दिया । लेकिन मुख्य मंत्री को यह पता नहीं था कि उस तावीज़ में दूसरी ही तरह की शक्ति है ।

तांत्रिक ने उस तावीज के बारे में बिलकुल उलटा बताया था । उसे पहनने से मुख्य मंत्री की हिम्मत बंधेगी नहीं, बल्कि वह वीरविकट का एक आज्ञकारी सहायक बन जायेगा । और उस तावीज को वास्तव में, डायन ने उस तांत्रिक के लिए ही विशेष विधि से बनाकर, मुख्यमंत्री को पहना देने
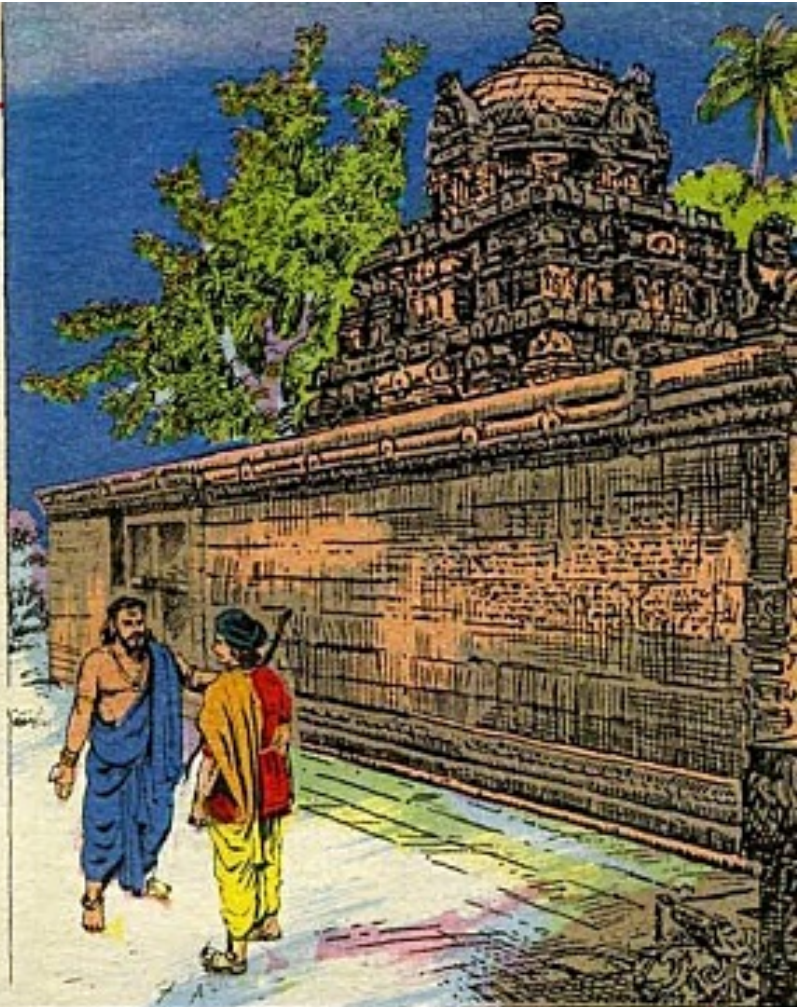
के लिए तांत्रिक के हाथ में दिया था, ताकि उनका काम बन जाए ।

"आपने पंचांग देख लिया है? राजकुमारी के अपने जन्म दिन के उपलक्ष्य में मंदिर आने का शुभ मुहूर्त कौन-सा निकाला है?" वीरविकट ने पूछा ।

"सूर्यास्त के एक घंटे के बाद ।" उसने कहा ।

"तब तो ठीक है । उस समय तक काफी अंधेरा हो जायेगा," तांत्रिक ने कहा । "अब एक ही तो महीना रह गया है । तब हम अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सब कुछ करने में सक्षम होंगे । होंगे या नहीं?" तांत्रिक ने पूछा ।

"होंगे । मुझे तो कोई दिक्कत नज़र नहीं

आती । मैं मंदिर के दरवाज़े की चाबी ले आया हूं, और मुझे यह भी पता है कि खुफिया सुरंग को कैसे खोला जाता है । जैसा कि आप जानते ही हैं, यह सुरंग केवल आपात स्थिति के लिए ही है । जब कोई बहुत बड़ा खतरा आ बने, तब राजा या रानी या राजघराने का कोई दूसरा महत्वपूर्ण सदस्य यहां मंदिर में पहुंचकर इस सुरंग के रास्ते जंगल में ग़ायब हो सकता है । स्पष्ट हीं है कि इस काम के लिए इसे कभी इस्तेमाल नहीं किया गया । अब हमें ध्यान इस बात का रखना है कि इस रास्ते में कोई अवरोध पैदा न हो," मुख्य मंत्री ने कहा ।

"आप ठीक कहते हैं," वीरविकट ने अपनी सहमति जताते हुए कहा ।

दोनों व्यक्तियों ने अब मंदिर का दरवाज़ा खोला और उसमें दाखिल हुए ।

मुख्य मंत्री ने मशाल जला ली । फिर वे दोनों गर्भगृह में दाखिल हो गये । देवी की मूर्ति के सामने अब भी दीये जल रहे थे ।

मूर्ति के पीछे थोड़ी-सी जगह थी जहां अंधेरा था और सीलन थी । इसके बाद वहां दीवार थी । उस दीवार पर कुछ आकृतियां उकेरी गयी थीं । एक आकृति दैत्याकार थी । मुख्य मंत्री ने अपने दोनों हाथ उसके जबड़ों में दे दिये और उन्हें चौड़ा करने लगा । तुरंत वहां एक रास्ता बन गया ।

अब वे दोनों व्यक्ति सुरंग में दाखिल हो चुके थे ।

अपूर्व अब तक चुपक-चुपके तांत्रिक और मुख्य मंत्री का पीछा करता रहा था । अब वह रुक गया और सोचने लगा कि क्या वह सुरंग का मुंह बंद कर दे । पर इससे होगा भी क्या, चाहे उसे बंद करने में वह सफल भी हो जाये । वे तो सुरंग में से निकल कर दूसरी तरफ पहुंच जायेंगे ।

अपूर्व यह नहीं जानता था कि वह सुरंग कहां जाकर खुलेगी । अब उसके सामने एक ही चारा था कि वह भी उनके पीछे-पीछे सुरंग में हो ले ।

लेकिन वह दाखिल होने को ही था कि उस पाषाण दैत्य के जबड़े खट से बंद हो

"एक बार राजकुमारी को सुरंग में धकेल दिया गया तो फिर उसे संभालने की ज़िम्मेदारी आपकी होगी । आपको सुरंग का मुंह उसी तरह बंद करना होगा जैसा मैंने आपको करके दिखाया है । फिर आपको जल्दी से जल्दी सुरंग के दूसरे सिरे पर पहुंचना होगा । आपके आदमी वहां तैयार रहने चाहिए ताकि राजकुमारी को फौरन वहां से हटाया जा सके ।"

"मेरे आदमी नहीं, डायन स्वयं वहां तैयार मिलेगी । वही उसे संभालेगी," वीरविकट ने कहा ।

"बढ़िया । लेकिन हर काम जल्दी से जल्दी होना चाहिए । चाहे चारों ओर उत्सव का वातावरण होगा, पर राजकुमारी की दासियों को उसकी अनुपस्थिति का भान होते पांच मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे । फौरन तलाश शुरू हो जायेगी उसकी ।" मुख्य मंत्री ने चेताते हुए कहा ।

"अगर तलाश शुरू भी हो जाती है, तो क्या उन्हें शक हो सकता है कि राजकुमारी को सुरंग में धकेल दिया गया है? कितने लोगों को पता है कि यहां सुरंग है? कितने लोग उस खुफिया द्वार को खोल सकते हैं?" वीरविकट ने पूछा

"बहुत कम को ही इसका पता है । राजा, रानी, पुजारी, मैं और सेनाध्यक्ष ही इसके बारे में जानते हैं," मुख्य मंत्री ने उत्तर दिया ।

गये । वह समझ गया कि सुरंग के भीतर थोड़ी दूरी पर कोई ऐसा यंत्र है जिससे जबड़े बंद हो जाते हैं ।

अपूर्व अब मंदिर से बाहर आ गया और वहीं इंतज़ार करने लगा । वे दोनों षड्यंत्रकारी मंदिर में वापस तो आयेंगे ही, क्योंकि उन्हें इसे बाहर से बंद भी करना है । उसे यह ज़रूरी लगा कि वह उनकी बातचीत सुने और पता लगाये कि वे सुरंग का उपयोग किस तरह करना चाहते हैं ।

अपूर्व ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ । एक घंटे के बाद ही वीरविकट तांत्रिक और मुख्यमंत्री मंदिर से बाहर आ गये । मंदिर पर ताला डालते समय मुख्यमंत्री ने कहा,

"मुझे एक तरकीब सूझी है । आप कहते हैं कि पुजारी को अपनी ओर करना मुश्किल होगा । अगर हम उसे प्रभावित न कर सके तो यह हमारे लिए बहुत बड़ा खतरा बन जायेगा । वह हमारी योजना राजा तक भी पहुंचा सकना है," तांत्रिक ने अपनी राय दी ।

"आपकी वह तरकीब है क्या?"

"शाम को राजकुमारी के मंदिर में आने से थोड़ा ही पहले हम पुजारी का सफाया कर देंग । फिर मैं उसी का भेस बदल लूंगा । मैं राजकुमारी को किसी बहाने देवी के सिंहासन के पीछे अकेला ही ले जाऊंगा और उसे सुरंग में धकेल कर वहां से स्वयं ग़ायब हो जाऊंगा और द्वार बंद कर दूंगा," तांत्रिक ने विवरण देते हुए कहा ।

"यह विचार तो अच्छा है । लेकिन पुजारी को खत्म करना क्या ज़रूरी है? वह तो बहुत ही नेक इंसान है ।" मुख्य मंत्री ने कहा ।

"मंत्री! तुम इतने बुज़दिल हो! कैसे इतने बड़े साम्राज्य पर शासन करोगे जब तुम सम्राट् बन जाओगे? तुम्हें पता ही है कि वह चंद्रप्रकाश हीरा कैसे-कैसे करिश्मे कर सकता है । यह तुम्हें एक दिन समूचे संसार का शासक बना सकता है," तांत्रिक ने हंसते हुए कहा । फिर बोला, "ठीक है, चिंता मत करो । हम पुजारी को मारेंगे नहीं, उसे कहीं छिपाकर केवल रोके रखेंगे । चलो, अब चलें यहां से ।"

अपूर्व एक खंभे के पीछे खड़ा उनकी बातें सुन रहा था । वह एक क्षण के लिए चक्कर में पड़ गया । किसका पीछा करे वह? तांत्रिक का? या कि मुख्य मंत्री का?

फिर उसने फैसला किया कि वह किसी के भी पीछे नहीं जायेगा । उसे षड्यंत्र के बारे में काफी कुछ पता चल गया था । वह सब कुछ राजा विश्ववर्मा को बता देगा ताकि इसे रोका जा सके ।

पर यह किया कैसे जाये? राजा को कैसे यह समाचार पहुंचाया जाये? यही तो उसके सामने एक प्रश्न था ।

(अगले अंक में समाप्य)

सही उत्तर

शिवराम एक छोटा-किसान था । एक दुर्घटना में उसका बेटा और बहू चल बसे । उनके दो बच्चे थे जिन्हें पालने का दायित्व उसी पर आ पड़ा । दादा ने दोनों पोतों का बड़े लाड़-प्यार से पालन किया, पर जायदाद के नाम पर उसके पास केवल एक मकान ही था । जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गयी, वैसे-वैसे उसके मन में अपने पोतों को लेकर चिंता घर करने लगी । दोनों पोते उच्छृंखल थे । वे दायित्व को समझते ही न थे । बस, ऐसे ही इधर उधर घूमते रहते ।

उन्हीं दिनों शिवराम का बचपन का एक दोस्त उससे मिलने आया । उसका नाम रामचंद्र था । शिवराम ने अपने पोतों के बारे में उससे बातचीत की ।

रामचंद्र ने शिवराम के पोतों को बुलवाया और उसने कहा, "देखो, मैं तुम दोनों से एक सवाल पूछूंगा । तुम अच्छी तरह सोच-समझ कर जवाब देना । जो होशियारी से जवाब देगा, मैं उसे दस रुपये इनाम दूंगा ।"

शिवराम के उन दोनों पोतों ने सर हिलाया और अपनी सहमति दे दी ।

अब रामचंद्र ने पूछा, "अगर भगवान् तुम्हें दर्शन देकर एक ही वर मांगने को कहें तो तुम क्य मांगोगे? तुम जो भी मांगो, वह तुम्हारे लिए बेहद लाभप्रद होना चाहिए ।"

काफी सोचने के बाद बड़े पोते ने कहा, "मैं तो यह वर मांगूंगा कि मुझे किसी तरह का अभाव न हो । मैं खेत का वर मांगूंगा ताकि मैं ठीक से जी सकूं ।"

अब बारी छोटे पोते की थी । वह बोला, "खेत? खेत किसलिए? मैं तो ऐसी अंगूठी मांगूंगा जिससे मुझे, मैं जो कुछ चाहूं, मिले । तब अभाव का सवाल ही कहां उठेगा ?"

छोटे पोते का उत्तर सुनकर रामचंद्र हंस दिया । उसने झट से उसे दस रुपये का पुरस्कार दिया और शिवराम से बोला, "तुम अपना मकान अपने बड़े पोते को दे दो । वह इसी गांव में किसी तरह जी लेगा । छोटे की तुम चिंता मत करना । वह व्यवहार-कुशल है । मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा और उसे ऐसा बनाकर वापस भेजूंगा जिससे वह भविष्य में तुम्हारे और अपने बड़े भाई के काम आ सके ।"

शिवराम ने ऐसा ही किया । अब उसकी जिदंगी बिलकुल निश्चिंत हो चुकी थी ।

—रामनारायण द्विवेदी

राजकुमारी का निर्णय

अपनी धुन के पक्के राजा विक्रम उस पेड़ के पास गये, वहां एक शाखा से लटकती लाश को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाला और पहले की तरह मौन साधे श्मशान की ओर बढ़ने लगे । उस लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, इस आधी रात में आपको इतनी तकलीफ उठाते देखकर मैं नहीं समझ पा रहा कि वजह क्या है । अगर आप किसी और राजा या सम्राट् के लिए यह सब कर रहे हैं तो आपको एक बात याद रखनी चाहिए कि राजा और सम्राट् भी अक्सर अपना वायदा नहीं निभाते । उदाहरण के लिए, वचन देकर वचन भंग करने वाले एक राजा, बहादुर होकर भी बुजदिलों जैसा व्यवहार करने वाले एक भील युवक और आखिरी पल में अविवेकपूर्ण निर्णय लेने वाली एक राजकुमारी के बारे में मैं एक कहानी सुनाऊंगा । आप उसे ध्यान से सुनें ताकि

बैताल कथाएं
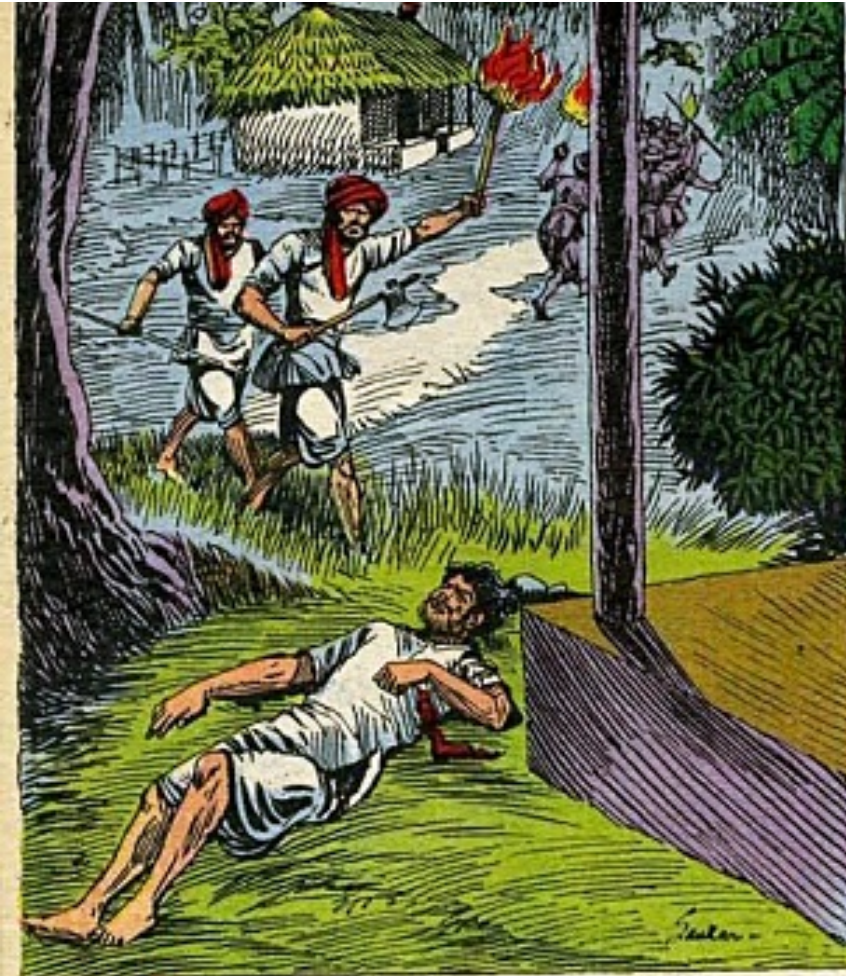
आपका ध्यान बंटा रहे और आपको थकान भी महसूस न हो ।" और बैताल वह कहानी सुनाने लगा–

सुवैशाली नाम के राज्य में राजा पद्माक्ष का शासन था । काफी समय से उसके राज्य में हर तरह से शांति थी, लेकिन इधर एक हिंस्र पशु अंधेरी रात में कहीं से एकाएक आ धमकता और राजधानी के निकट के इलाके के लोगों पर आक्रमण करके उन्हें मार डालता । कोई नहीं जानता था कि वह क्रूर जीव कहां से आता है और कहां जाकर छिप जाता है ।

.उस हिंस्र और क्रूर जीव को खत्म कर डालने के लिए राजा पद्माक्ष ने कई सैनिकों को भेजा । वे सैनिक उसे खत्म तो क्या करते, स्वयं ही खत्म हो जाने लगे ।

राजा ने अपने मंत्री तथा युवरानी विवेकवती से इस बारे में चर्चा की और एक निर्णय लिया । उसने समूचे राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो व्यक्ति उस भयंकर पशु का वध करेगा, उसे पुरस्कार स्वरूप आधा राज्य दिया जायेगा और साथ ही युवरानी से उसका विवाह कर दिया जायेगा ।

राजा की ओर से घोषणा सुनकर राज्य के बहुत से युवक उस हिंस्र पशु को खत्म करने के लिए आगे आते, पर स्वयं ही खत्म हो जाते ।

राज्य के निकटवर्ती जंगल में रहनेवाले एक भील युवक वीरबाहु ने भी इस चुनौती को स्वीकारा । वह भीलों के नायक का बेटा था । वह रात के समय एक पखवाड़े तक उस हिंस्र पशु की खोज करता रहा । आखिर उसने पता लगा ही लिया कि वह पशु एक पहाड़ी झरने के पास एक झाड़ी में छिप जाता है ।

युवक पास के एक पेड़ पर चढ़ गया और उस पशु को देखकर चौंक उठा । उसका सर शेर की तरह था, पर बाकी शरीर पर बाघ की तरह की धारियां थीं ।

इतने में उस विचित्र पशु ने सर उठाकर देखा और उछलकर वीरबाहु पर लपका । वीरबाहु ने तुरंत एक तीर छोड़ा जिसका निशाना उस पशु के कलेजे पर था ।

तीर निशाने पर ही लगा था, पर उस विचित्र पशु ने अब एक उड़ान भरी और वीरबाहु पर झपटा। वीरबाहु ने अब उस पर अपने बर्छे से वार किया। बर्छा उस पशु के गले में धंस गया। वह सीधा ज़मीन पर जा गिरा। वीरबाहु पेड़ से एकदम नीचे कूदा और उसने उस पशु पर तीरों की बौछार शुरू कर दी। फिर देखते ही देखते उस पशु ने अपने प्राण छोड़ दिये।

सुबह हुई तो यह खबर चारों ओर फैल गयी। दूर-दूर से जंगली कबीलों के लोग वहां जुटने लगे और उस विचित्र पशु को देखकर अचंभे में पड़े रहे। उन्हें इस बात से खुशी हो रही थी कि उनके नायक के बेटे ने ही उन्हें उस भयंकर जीव से मुक्ति दिलायी है और शीघ्र ही युवरानी से विवाहसूत्र में बंधकर वह आधे राज्य का मालिक बन जायेगा।

राजा पद्माक्ष को जब यह खबर मिली कि एक भील युवक ने अकेले ही उस भयंकर जीव को पार लगा दिया है तो वह दुःख में डूब गया, क्योंकि उसकी बेटी के लिए एक भील युवक किसी तरह भी योग्य नहीं है। ऐसे उजड्ड युवक को दामाद कैसे बनाया जा सकता है? इसी बात को लेकर वह बहुत परेशान था। राजा ने तो, दरअसल, यही सोचा था कि उसकी घोषणा सुनकर कोई ऊंचे कुल का युवक ही आगे आयेगा और उस जीव को समाप्त करने का साहस दिखायेगा। लेकिन हुआ कुछ और ही था, एक जंगली और बर्बर युवक ने यह काम पूरा किया था।

राजा ने अपने मंत्री और बेटी से फिर विचार-विमर्श किया और उनसे जानना चाहा कि ऐसी स्थिति में अब क्या किया जाये। मंत्री और राजकुमारी स्वयं ही किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे। उनकी बुद्धि बिलकुल काम नहीं कर रही थी। हां, वे इतना ज़रूर कह रहे थे कि अगर यह शर्त पूरी कर दी जाती है तो इससे राजवंश पर ज़बरदस्त धब्बा लग जायेगा।

आखिर, राजकुमारी ने एक बात कही, "पिताजी, आप उस भील युवक से अकेले में बात करें और उसे समझा दें कि उसे केवल आधा राज्य ही मिल सकता है!"

मंत्री ने भी इसका समर्थन किया और बोला, "हां, प्रभु! ऐसा करना ही उचित होगा। आधा राज्य पाकर वीरबाहु एकदम गदगद हो जायेगा। दूसरे, यह बात उसी के मुंह से कहलवानी चाहिए कि वह युवरानी के योग्य नहीं, क्योंकि वह सभ्यता से दूर जंगल में रहता है और राजकुमारी से विवाह नहीं कर सकता। इससे राजा का वचन-भंग नहीं होगा।"

राजा को यह सलाह पसंद आयी। वीरबाहु यदि स्वयं ही यह बात कह दे कि उसी ने युवरानी विवेकवती के लिए अपने को अयोग्य पाकर उस से विवाह करने से इनकार कर दिया है तो प्रजा की नज़र में राजा का मान-सम्मान वैसे ही बना रहेगा।

राजा ने वैसा ही किया। उसने वीरबाहु को बुलवा भेजा।

वीरबाहु जब राज दरबार में दाखिल हुआ तो उसका खूब ज़ोरदार ढंग से सत्कार किया गया और एक गुप्त कक्ष में उसके ठहरने की व्यवस्था कर दी गयी। फिर उपयुक्त समय देखकर राजा, उसका मंत्री और युवरानी, तीनों एकसाथ उसके कक्ष में गये और उससे अपने मन की बात बता दी। फिर उससे कहा गया कि वह लोगों को यही कहे कि उसने युवरानी से विवाह करने से इनकार कर दिया है।

वीरबाहु क्षण भर के लिए कुछ सोचता रहा। फिर बोला, "राजन्, मुझे आधे

राज्य की भी कामना नहीं । मैंने आपकी घोषणा सुनकर पुरस्कार के लालच में यह काम नहीं किया । मैंने अपने देश के प्रति एक नागरिक होने के नाते अपना कर्तव्य निभाया है । मैं अपने देशवासियों को इस खतरे से बचाना चाहता था, इसीलिए मैंने यह जोखिम उठाकर उस हिंस्र पशु को खत्म किया । मैं स्वयं ही लोगों से कहूंगा कि मुझे न आधा राज्य चाहिए और न ही युवरानी से विवाह करने की मेरी इच्छा है ।" और यह कहकर वह युवक वहां से चलने को हुआ ।

राजा और मंत्री खुश थे कि समस्या का सहज ही समाधान हो गया । लेकिन युवरानी विवेकवती ने वीरबाहु को रोका और अपने पिता से बोली, "पिताजी, इस युवक को आप आधा राज्य दें या न दें, मुझे इससे कुछ लेना देना नहीं, पर मैं अपना विवाह इसी के साथ करूंगी । आप मुझे क्षमा करें और इसके लिए मुझे अनुमति दें ।"

युवरानी की बात सुनकर राजा पद्माक्ष और उसका मंत्री स्तब्ध रह गये । क्योंकि राजकुमारी से उन्हें ऐसे निर्णय की आशा नहीं थी । वे सोच नहीं पाये कि एक जंगली और बर्बर युवक से राजकुमारी क्यों विवाह करना चाह रही थी । इस लिए उनके मुंह से एक शब्द भी न निकल पाया ।

बैताल की कहानी खत्म हो चुकी थी ।

कहानी खत्म करते ही वह बोला, "राजन्! वीरबाहु ने आधा राज्य पाने और राजा का दामाद बनने की इच्छा से ही उस हिंस्र पशु का वध किया था, और इसी आशा से वह राजा से बुलावा आने पर उससे मिलने आया था । पर जैसे ही उसे यह आभास हुआ कि युवरानी से उसका विवाह होने वाला नहीं है, तो वह यह झूठ क्यों बोला कि उसने जो कुछ किया, पुरस्कार पाने के लिए नहीं, बल्कि एक नागरिक के नाते अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए किया । ऐसा साहसी युवक और ऐसी भीरुता । क्यों उसने हाथ लगने वाले आधे राज्य को भी छोड़ दिया? उधर, पहले तो वह युवक युवरानी विवेकवती

को बिलकुल जंगली और बर्बर लगा, लेकिन फिर उसने एकदम अपना निर्णय बदला और वीरबाहु से ही विवाह करने की अनुमति मांगने लगी। इन सब संदेहों का समाधान उन्हें जानते हुए भी यदि आप नहीं बतायेंगे तो आपका सर फट जायेगा।"

राजा विक्रम का उत्तर इस प्रकार था, "राजा होने के नाते पद्माक्ष का यह कर्त्तव्य था कि वह अपनी प्रजा का पालन करे। पर प्रजा का पालक होते हुए भी उसने अपना वचन नहीं निभाया, बल्कि उसे भंग किया। उसने स्वयं यह चाहा कि उसकी बेटी का विवाह वीरबाहु से न हो, और इसके लिए उसने वीरबाहु के मुंह से ही यह कहलवाना चाहा कि वह युवरानी से विवाह करने योग्य नहीं है। अब जो राजा अपने वचन पर कायम नहीं रह सकता, उससे आधा राज्य लेने का भी क्या लाभ? हो सकता है ऐसा राजा फिर कहीं अमानत में ख्यानत कर दे! इसीलिए इस सदमे से बचने के लिए वीरबाहु ने झूठ बोला और इस बात के लिए रज़ामंद हो गया कि वह लोगों से वही कुछ कहेगा जो राजा ने उससे कहा है। युवरानी विवेकवती ने पहले वीरबाहु को इसलिए पसंद नहीं किया था कि वह हीन कुल से है और सभ्यता से दूर जंगल में रहता है। पर राजा के प्रति उस युवक के व्यवहार को देखकर उसे लगा कि अपढ़ होते हुए भी वह बेहद सभ्य और संस्कारवान् है और समयोचित निर्णय लेने की भी क्षमता रखता है। इसीलिए वह वीरबाहु के प्रति आकर्षित हुई और अपने पिता से उसके साथ विवाह करने की अनुमति मांगी।"

राजा विक्रम का उत्तर सही था। पर उत्तर देने के लिए राजा को अपना मुंह खोलना ही पड़ा, जिससे उनका मौनभंग हो गया। इसलिए बैताल लाश समेत वहां से ग़ायब हो गया और वापस उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा। (कल्पित)

[आधार : रेवती की रचना]

प्रधान सलाहकार

बहुत समय पहले विक्रमपुरी राज्य पर राजा धीरसिंह का राज था। एक दिन राजा अपने उपवन में बैठा अपने दरबारियों से बातचीत कर रहा था। बातचीत करते-करते अचानक उसकी निगाह आसमान की ओर गयी। और वह बोला, "वाह, यह एक विलक्षण विमान है! लगता है उसमें देवता या गंधर्व बैठकर जा रहे हैं!"

राजा की बात सुनकर उसके एक दरबारी चंद्रकेतु ने भी उसी तरह आकाश की ओर देखा और एकाएक कह उठा, "वाह, राजन्! निस्संदेह वह कोई साधारण विमान नहीं। हो सकता है वह पुष्पक विमान ही हो।"

वहां सूर्यबाहु नाम का भी एक दरबारी था। वह बोला, "महाप्रभु, चंद्रकेतु बिलकुल ठीक कहता है। इसमें संदेह नहीं।"

उन दरबारियों में राजपुरोहित का पुत्र पद्मनेत्र भी बैठा था। उसने तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण की थी। केवल वही उनमें ऐसा था जिसने चंद्रकेतु और सूर्यबाहु के स्वर में स्वर नहीं मिलाया। बाकी सब दरबारी राजा की हां में हां मिलाते रहे।

पद्मनेत्र अब तक चुप्पी साधे हुए था। राजा धीरसिंह ने पूछ ही लिया, "क्या बात है, पद्मनेत्र? तुम चुप क्यों हो? क्या तुम उस अदभुत विमान को नहीं देख पाये?"

पद्मनेत्र ने विनीत स्वर में उत्तर दिया, "क्षमा चाहता हूं, महाराज। यदि आप मुझे आश्वस्त करें कि आप मेरी उद्दण्डता को अन्यथा नहीं लेंगे तो मैं अवश्य आपके प्रश्न का उत्तर दूंगा।"

"बेशक, तुम बिना किसी डर के अपने मन की बात कहो, पद्मनेत्र।" राजा बोला।

तब पद्मनेत्र बोला, "प्रभु! आकाश में

लक्ष्मी विद्या

कोई विमान नहीं था। आपने जो कुछ देखा, वह सब आपका भ्रम था।"

राजा धीरसिंह ने हलका-सा गुस्सा दिखाते हुए कहा, "मैं यहां अकेला तो नहीं था। मेरे साथ ये सब लोग भी थे। हम सबने वह विमान देखा। तुम इसे भ्रम कैसे कह सकते हो?"

पद्मनेत्र के स्वर में पहले जैसा ही विनीत भाव था। उसने कहा, "प्रभु, पुष्पक विमान तथा देवताओं का आकाश-विहार कोरी कल्पना की बातें हैं। आप तो हर बात तर्क की कसौटी पर कसते हैं। फिर आपने यह बात कैसे कह दी। मैं तो यही मानता हूं कि इस संसार में हर बात के पीछे अपना तर्क रहता है। जब हमारी आँखें या कान कुछ असाधारण देखें या सुनें तो समझ लेना चाहिए कि शरीर में कोई न कोई कमी है। यह मानसिक दुर्बलता भी हो सकती है। लेकिन जैसा भ्रम आपको हुआ है, वैसा ही भ्रम यहां उपस्थित बाकी लोगों को भी हुआ। इस पर मुझे अचंभा हो रहा है। मुझे क्षमा करें। अपने भ्रम का कारण ये सब लोग अच्छी तरह जानते हैं। दरअसल, यह मैं भी जानता हूं और शायद आप भी।"

पद्मनेत्र की बात सुनकर राजा धीरसिंह ने सभी दरबारियों को संबोधित करते हुए कहा, "पद्मनेत्र ने जो कुछ कहा है, ठीक कहा है। मैंने किसी विमान को नहीं देखा था, न ही मैंने किन्हीं गंधर्वों को देखा। मुझे ऐसे सलाहकार की ज़रूरत थी जो राज्य की स्थितियों के बारे में मुझे सही-सही विवरण दे। इसीलिए मैंने अपनी कल्पना से इस विमान का सृजन किया। मैं जानता हूं कि तुम सब लोग मेरी हां में हां मिलाने में तत्पर रहते हो, ताकि तुम्हें अधिक से अधिक सम्मान मिलता रहे। लेकिन तुम लोगों ने अपना दायित्व कभी नहीं निभाया। तुमने मुझे वास्तविक स्थिति से कभी अवगत नहीं कराया। लेकिन इधर यह पद्मनेत्र है जिसे अपने दायित्व का बोध है। वह मुझे यों ही खुश करने की फिराक में नहीं था। उसने मेरे मन को जीत लिया है। इसलिए, मैं इसी क्षण से उसे अपना प्रधान सलाहकार नियुक्त करता हूं।"

चन्दामामा परिशिष्ट-४०

भारत के पशु-पक्षी

शेर

एक समय जिसे हम "रायल बेंगाल टाइगर" के नाम पुकारते थे, वह शानदार पशु बंगाल के सुंदरवन क्षेत्र में काफी मात्रा में पाया जाता था । बेशक, शेर भारतीय जंगलों का निर्विवाद सम्राट् है । इसीलिए इसके शिकारियों में राजा लोग भी शामिल होते थे और शेर का शिकार एक शाही खेल का दर्जा पा गया था । लेकिन इससे शेर की संख्या भारी मात्रा में कम होने लगी । एक समय ४० हजार के करीब थी । २० वर्ष हुए, १९७२ में यह संख्या २००० से भी कम हो गयी । शेर को तब संकटास्पद प्राणी घोषित किया गया । साथ ही इसे राष्ट्रीय पशु का पद दिया गया और प्रोजेक्ट टाइगर स्कीम के अंतर्गत ले लिया गया जिससे यह बिलकुल खत्म हो जाने से बच गया । इस समय १६ मुख्य अरण्यों और दूसरे स्थलों पर ४००० से कुछ अधिक शेर उपलब्ध हैं ।

शेर बिल्ली (मार्जाल) के परिवार से संबंध रखता है और ज़बरदस्त शिकारी जीव माना जाता है, और जो कुछ भी इसे चलता-फिरता दिखाई दे, उसे खा जाता है । इसे जो पशु ज़्यादा पसंद आते हैं, वे हैं सांभर, चीतल, काला हिरण और जंगली सूअर । यह बहुत अच्छा तैराक भी है । अगर इसे कोई और शिकार न मिले तो यह मछली पकड़ लेता है । यह हरे-भरे जंगलों में रहता है । सर से लेकर दुम के सिरे तक इसकी लंबाई आम तौर पर ८-९ फुट (२८०-२९० सें.मी.) होती है और इसका वज़न २०० किलोग्राम के करीब होता है । इसकी आयु १५ से २० वर्ष होती है ।

अगर शेर को चोट लग जाये तो यह अक्सर आदमखोर बन जाता है ।

वह नन्हा "उस्ताद"

हाल ही में मद्रास में एक संगीत उत्सव समाप्त हुआ। एक शाम वहां श्रोता इतने भाव-विभोर हुए कि वे अपनी-अपनी जगह से उठकर खड़े हो गये और मंच पर बैठे कलाकार की देर तक दाद देते रहे।

वह कलाकार और कोई नहीं, १२-वर्षीय बांसुरी वादक शशांक था जो पिछले दो घंटों से अपनी कला का प्रदर्शन कर रहा था। 'मुख्य समय' (सायं ६ बजे से ९ बजे तक) संगीत उत्सवों में आम तौर पर दिग्गजों और 'विद्वानों' के लिए सुरक्षित रखा जाता है, लेकिन शशांक को वही समय दिया गया और उसने मर्मज्ञों और पारखियों को निराश नहीं किया। श्रोताओं से उसे जो दाद मिली, वह उसका पूरा हकदार था।

नन्हा शशांक अभी एक वर्ष का भी नहीं हुआ था कि वह कुछ ऐसे संकेत देने लगा जिनसे पता चलता था कि संगीत की उसे कुछ समझ है। उसे कुछ राग अच्छे लगते थे। लेकिन जब उसके पिता सुब्रह्मणियम्, जो स्वयं एक बांसुरी वादक हैं, कुछ दूसरे राग छेड़ देते तो वह बेचैन हो उठता।

शशांक जब तीन वर्ष का हुआ तो वह ७० के करीब सभी प्रमुख रागों को पहचानने लगा। संगीत में उसकी रुचि को देखकर पिता ने अपने पुत्र के लिए नियमित रूप से संगीत सीखने की व्यवस्था कर दी। उसने उसके लिए एक वाद्य यंत्र, यानी वायलिन, भी तय कर लिया, लेकिन शशांक ने एक दिन उसे एक तरफ रख दिया और अपने पिता की एक बांसुरी उठाकर उसे बजाने लगा। साफ ही था कि शशांक अपने पिता को गौर से बांसुरी बजाते देखता रहता था और यह भी देखता रहता था कि बांसुरी पर उनकी उंगलियां कैसे चलती हैं। फिर तो वह बालक अपनी कला में आगे ही आगे बढ़ता गया।

शशांक का परिवार बंगलौर से मद्रास चला आया। मद्रास कर्नाटक संगीत की राजधानी है। उसके परिवार के लोग चाहते थे कि वह बालक उस संगीत-पद्धति को बढ़िया से बढ़िया ढंग से सीखे। पिता, उस समय एक महाविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के पद पर थे। उन्होंने वह काम छोड़ दिया और सारा समय अपने होनहार बेटे पर लगाने लगे।

शशांक दस वर्ष का था जब उसने आस्ट्रेलिया के एडिलेड में अपना पहला कार्यक्रम दिया। वहां से लौटते समय उसने सिंगापुर और मलेशिया में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया। भारत में उसका पहला कार्यक्रम सितंबर १९९० में बंबई के एक बहुत ही गौरवशाली सभागार में हुआ। मद्रास की एक प्रमुख संगीत संस्था ने उसे पिछले वर्ष संगीत उत्सव के लिए आमंत्रित किया, और इस वर्ष तो एक के बाद एक निमंत्रण आ रहे हैं जिससे आयोजकों को यह भरोसा हो गया है कि श्रोताओं की संख्या अद्भुत होगी।

लेकिन शशांक किसी भी अन्य साधारण बालक की तरह है। उसे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी वह जिद्द भी पकड़ लेता है और बांसुरी को छूता तक नहीं। तब उसे, उसके पिता के अनुसार, समझाना-बुझाना पड़ता और लालच भी देना पड़ता है। वह अपनी उम्र के लड़कों के साथ खेलने के बजाय अपनी बहन शांतला के साथ खेलना पसंद करता है। अगर उसे मौका मिले तो वह अपना सारा समय कैसेट सुनने में ही बिता देता।

तुम्हें यह सुनकर ताज्जुब नहीं होना चाहिए यदि तुम्हें बताया जाये कि अपने परिवार में कमाने वाला केवल अब शशांक ही है।

क्या तुम जानते हो?

१. संयुक्त राष्ट्र का पहला महासचिव कौन था?
२. राष्ट्रमंडल दिवस कब मनाया जाता है?
३. जवाहरलाल नेहरू ने 'भारत की खोज' नामक अपना ग्रंथ तब लिखा जब वह जेल में थे । वह जेल कौन सी थी?
४. 'लेडी विद द लैंप'—यह नाम किसे दिया गया?
५. हजरत मुहम्मद के माता-पिता कौन थे?
६. पहली उड़न तश्तरी के बारे में कब पता चला?
७. जिस समय ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया जा रहा था, उस समय उन्होंने अपने एक शिष्य से कहा था कि वह उनकी माता मेरी का ख्याल रखे । यह शिष्य कौन था?
८. 'ओल्ड टेस्टामेंट' में नोह के दादा के रूप में किसका उल्लेख है?
९. चांद पर उतरने वाली पहली मानव-निर्मित वस्तु कौनसी है?
१०. माओ-तुंग ने चीन के लोक गणराज्य की कब घोषणा की?
११. किसने अपनी कृतियों में एटलांटिस नाम की पौराणिक भूमि का वर्णन किया है?
१२. राइट्स बंधुओं को पहली मानव उड़ान का श्रेय दिया जाता है । उनका असली धंधा क्या था?
१३. इटली की पहली महिला चिकित्सक को एक बिलकुल अलग क्षेत्र में ख्याति मिली । वह चिकित्सक कौन थी?
१४. पहली बार किसी अमरीकी अभिनेत्री को टिकट पर अंकित किया गया । वह अभिनेत्री कौन थी?
१५. क्रिकेट एक देश का राष्ट्रीय खेल है । वह देश कौन-सा है?

उत्तर

१. ट्रिग्वी ली ।
२. २४ मई ।
३. अहमदनगर का किला ।
४. फ्लोरेंस नाइटिंगेल । इन्होंने क्रीमिया युद्ध (१८५३-५६) में घायल सैनिकों की देखभाल करने के बाद नर्सिंग सेवा शुरू की ।
५. अब्दुल्ला और अमीना ।
६. २४ जून, १९४७ को, जब एक वायुयान चालक ने समुद्र की सतह पर एक तश्तरी को चलते देखा ।
७. जॉन ।
८. मेथुसेलाह । बाइबल के अनुसार वह ९६९ वर्षों तक जीवित रहा । अब किसी भी बहुत बूढ़े व्यक्ति को मेथुसेलाह कहते हैं ।
९. १३ सितंबर, १९५९ को लूना-२ के नाम से प्रसिद्ध रूसी अंतरिक्ष खोज-यान चंद्रमा पर गिरकर चूर-चूर हो गया ।
१०. २१ सितंबर, १९४९ को । सोवियत संघ पहला देश था जिसने २ अक्तूबर को इसे मान्यता प्रदान की ।
११. यूनानी दार्शनिक प्लेटो ।
१२. वे एक साइकिल की दुकान और कारखाना चलाते थे ।
१३. मारिया मांटेसरी । यह एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् थीं । इन्हीं के नाम से बाद में एक शिक्षा-पद्धति शुरू हुई ।
१४. ग्रेस कैली, जिन्हें अपनी फिल्म 'द कंट्री गर्ल' के लिए ऑस्कर पुरस्कार मिला ।
१५. आस्ट्रेलिया ।

सोने के दिल वाला बालक

उत्तर प्रदेश के भूकंप-पीड़ित लोगों को राहत पहुंचाने के लिए जहां भारत के विभिन्न राज्य और कल्याणकारी संस्थाएं लाखों रुपये जुटा रही हैं, वहां चीन में शंघाई के एक १०-वर्षीय बालक, यान ज़ेनयी ने छः सौ रुपये का दान देकर अपनी सहृदयता का ज़बरदस्त उदाहरण दिया है । उसने अपने देश के दूरदर्शन के एक धारावाहिक में एक भूमिका निभाकर १००० यूआन कमाये थे । दान में दी गयी राशि उसकी इस कमाई का आधा है । इससे पहले वह आधी राशि पिछले वर्ष के शुरू में चीन में आयी बाढ़ से पीड़ित व्यक्तियों की राहत के लिए दे चुका था । दूरदर्शन पर जब उसने भूकंप-ग्रस्त बच्चों को देखा तो उससे रहा न गया । उसने दान की राशि और अपना एक पत्र अपने पिता को दिया जिसने उन्हें बीजिंग में भारत के राजदूत को भेंट किया । इस प्रयास में यान के पिता को एक घंटे से अधिक समय तक भारतीय दूतावास में इंतज़ार करना पड़ा ।

चंदामामा की खबरें

प्रशांत सागर के आर-पार नौका में

"हमारा हर मिनट एक घंटे की तरह बीत रहा था और हर घंटा पूरे दिन की तरह लग रहा था," जिरार्ड द' एबोविल ने कहा । ४१-वर्षीय इस फ्रांसीसी ने यह नहीं कहा कि प्रशांत सागर को अपनी ८-मीटर लंबी नौका, 'लं सेक्टर' में पार करने में उसे जो १३३ दिन लगे, वे १३३ वर्ष के बराबर थे । वह ११ जुलाई को जापान के पूर्वी तट से रवाना हुआ था और २१ नवंबर को १० हजार किलोमीटर की दूरी तय करके अमरीका के ओरेगॉन् में पोर्टलैंड के निकट इल्वाको में पहुंचा । उस समय वह काफी थका हुआ दिख रहा था । लेकिन एकदम भाव-विभोर भी हो रहा था । गजब की हिम्मत! यही हमें कहना पड़ेगा ।

पीर परायी

एक गांव था श्रीपुर। वहां गोवर्धन नाम का एक धनवान् रहता था। उसका व्यापार बहुत फैला हुआ था। बेशुमार नौकर-चाकर थे उसके यहां।

गोवर्धन कभी भी उन नौकर-चाकरों की समस्याओं के बारे में न सोचता। केवल उनसे ज़्यादा से ज़्यादा काम लेने की ही फिराक में रहता। जब धूप तेज होती और उनका गला प्यास से सूखता होता तब भी वह उन्हें पानी पीने को न देता, बल्कि बेरहमी से उनसे काम करवाये जाता।

गोवर्धन की पत्नी सुजाता, और उसके पुत्र, गिरिधर, को यह अच्छा नहीं लगता था। वे उससे बहुत दुखी होते, पर कर कुछ नहीं पाते थे।

गोवर्धन के पास एक सुंदर सी बग्घी थी। वह उस बग्घी में बैठकर अक्सर पास के शहर में जाता। अपने घोड़े की वह खूब देख-रेख करता था और उसे खूब स्नेह देता था, पर बग्घी चलाने वाले कोचवान, बीरू, से वह वैसा ही उपेक्षापूर्ण व्यवहार करता जैसा कि वह दूसरे नौकरों से करता था।

शहर जाने के लिए उसे एक जंगल में से होकर गुज़रना पड़ता था। उस जंगल में खूंख्वार जानवर ही नहीं, खतरनाक डाकू भी रहते थे। इसलिए रात उतर आने पर वहां से कोई गुज़रने का साहस नहीं करता था।

एक दिन गोवर्धन शहर में किसी रिश्तेदार के यहां होने वाली शादी में सम्मिलित होने के लिए अपनी पत्नी और पुत्र के साथ बग्घी में बैठकर निकला। पत्नी सुजाता के पास ढेर सारा सामान था। पुत्र के कहने पर गोवर्धन ने व्यापार से संबंधित बहुत सी वस्तुएं दो संदूकों में भरकर अपने साथ बग्घी में रख ली थीं। वे अपने यहां से बहुत तड़के

सुधा श्रीवास्तव

कभी की पलट गयी होती!" गोवर्धन ने कहा ।

"अब हमें क्या करना होगा?" गिरिधर ने प्रश्न किया ।

"करेंगे क्या! हम तीनों को थोड़ा-थोड़ा करके यह सामान ढोना होगा । दूसरा कोई चारा भी तो नहीं!" सुजाता ने उत्तर दिया ।

लेकिन खूंखार जानवरों और खतरनाक डाकुओं के विचार से तीनों इतने भयभीत थे कि उन्हें बीरू के बारे में कुछ सोचने की होश ही न थी । तीनों ने थोड़ा-थोड़ा सामान अपने-अपने सर पर उठा रखा था और धीरे-धीरे चले जा रहे थे ।

थोड़ी दूर ही गये थे कि सुजाता को बीरू का ध्यान आया । बोली, "बीरू को तो हम वहीं छोड़ आये हैं । जाने इस जंगल में उसका क्या हाल होगा!"

"यह सब अब सोचने की ज़रूरत नहीं । शहर पहुंच कर उसके लिए किसी आदमी को भेज देंगे । तुम्हें बग्घी और घोड़े का कोई ख्याल नहीं । क्या वे यों ही आ गये थे?" गोवर्धन झुंझलाया हुआ था ।

अभी वे मुश्किल से एक फलांग ही चल पाये होंगे कि उन्हें पता चल गया कि बोझ ढोना क्या होता है । उधर धूप कड़ी थी और जंगल पार नहीं हो रहा था । जब जंगल पार हुआ तो वे तपते रेतीले इलाके में आ पहुंचे ।

वे तीनों अब तक बुरी तरह थक चुके थे । सबसे बोझिल सामान गोवर्धन उठाये

ही निकले थे और दोपहर होने तक जंगल के बीच पहुंच गये थे ।

बग्घी चलाने वाला, बीरू, अचानक अपने दिल को दबाये बग्घी में ही लुढ़क गया और कराहने लगा । उसके हाथ से घोड़े की लगाम छूट गयी । लगाम छूट जाने से वह घोड़ा एकाएक उछला और बग्घी से अलग हो गया । फिर वह बेतहाशा दौड़ने लगा । बग्घी घोड़े के बगैर कुछ दूर तक लुढ़कती रही और फिर एक पेड़ से टकराकर रुक गयी । बग्घी में बैठे गोवर्धन, सुजाता और गिरिधर उससे नीचे उतरे । बीरू वैसे ही उसमें लुढ़का पड़ा था और कुछ बोल नहीं पा रहा था ।

"बड़े भाग्यशाली हैं हम, वरना बग्घी

हुआ था । उसे लगा कि उसके लिए अब एक कदम भी आगे बढ़ पाना मुश्किल है । इसलिए सामान अब उसने नीचे रख दिया और उस पर बैठते हुए पत्नी से बोला, "बड़ी प्यास लगी है । गला सूखा जा रहा है । पानी वाला बर्तन कहां है?"

पति की बात पर पत्नी चौंकी, और बोली, "अरे, वह तो बग्घी में ही छूट गया ।"

उस समय गोवर्धन को अपने नौकरों की याद हो आयी जो उतनी कड़ी धूप में भारी से भारी सामान ढोते थे । उसे अब पता चला कि उन्हें प्यासे रखकर उनसे काम करवाना उनके लिए कितना तकलीफदेह होता होगा । तभी उसे जंगल में बग्घी में पड़े, दिल के दौरे से पीड़ित, बीरू की याद हो आयी । बीरू बूढ़ा था और बीमार था । उसे यों ही वहां छोड़कर चले आना गोवर्धन को जघन्य अपराध लगा ।

वह उठकर खड़ा हो गया और पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए बोला, "मैं बग्घी से वह पानी का बर्तन लिये आता हूं । तुम लोग यहीं रुको ।"

इस पर उसका बेटा बोला, "पिता जी, आप यहीं रुकिये । मैं लिये आता हूं ।"

पर गोवर्धन ने गिरिधर को रोका और कहने लगा, "मैं पानी के बर्तन के लिए वहां नहीं जा रहा हूं । मैं दिल के दौरे से पीड़ित उस कोचवान के लिए जा रहा हूं । हम घोड़े को भी ढूंढ़ लेते हैं । हम बीरू को शहर में किसी वैद्य को दिखायेंगे ।"

गोवर्धन के मुंह से ऐसी बातें सुनकर सुजाता और गिरिधर एक दूसरे का मुंह देखने
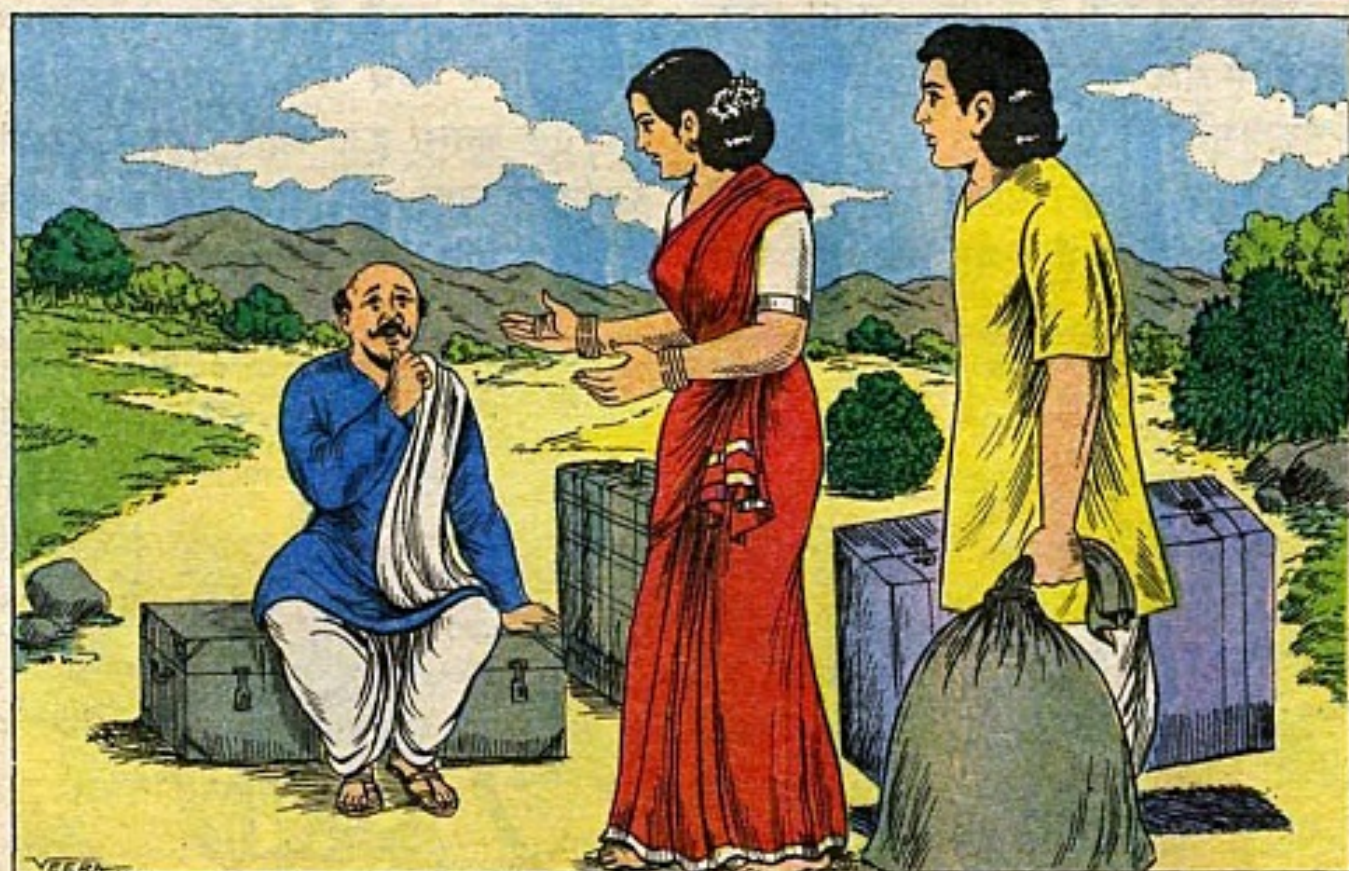
लगे। गोवर्धन समझ गया, बोला, "आज तक मैं दूसरे इंसानों के प्रति बर्बर रहा। हमें जो अब अनुभव हुआ है, वह हमारे लिए अच्छी नसीहत है। कहते हैं न—जा के पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर परायी! अब मुझे पता चल गया है कि हमारे नौकर-चाकरों को इस कड़ी धूप में कितना कष्ट होता होगा, और मारे प्यास के उनकी क्या हालत होती होगी।"

इतने में उन्हें अपने घोड़े की टाप की आवाज़ सुनाई दी। साथ में उसकी हिनहिनाहट भी। बीरू बग्घी हांकता हुआ उन्हीं की ओर चला आ रहा था।

बग्घी जब उनके पास आकर रुकी तो गोवर्धन ने कहा, "बीरू, तुमने यह तकलीफ क्यों उठायी? तुम तो स्वयं ही दिल के दौरे से बेहाल हुए पड़े थे। पहले तुमने घोड़ा ढूंढ़ा होगा और फिर—" गोवर्धन की आवाज़ में सहानुभूति थी।

"मालिक, पिछले सोलह सालों से इसी बीमारी से पीड़ित हूं। यह मेरी जान नहीं लेगी। मैं इसका आदी हो चुका हूं। और यह घोड़ा, जाता भी कहां! खुद ही गाड़ी के पास लौट आया। मेरी वजह से आपको यह बोझ उठाने की नौबत आ गयी। इसके लिए आप मुझे क्षमा करें।" बीरू गिड़गिड़ाता हुआ कह रहा था।

बीरू की बात सुनकर गोवर्धन के मन का बोझ कुछ हलका हुआ। उसने बीरू की पीठ ठोंकी और पानी का बर्तन बग्घी में से निकालकर पानी गटागट पी गया। फिर बोला, "तुमने ऐसी कौन सी गलती की है जिसके लिए तुम्हें क्षमा करूं? जो कुछ हुआ, ठीक ही हुआ। मैं समझ गया हूं कि तुम लोगों के प्रति मुझे इतना क्रूर नहीं होना चाहिए था।"

यह कहकर गोवर्धन अपनी पत्नी और पुत्र के साथ बग्घी में जा बैठा और जल्द ही वे शहर पहुंच गये। लेकिन गोवर्धन अब एक बदला हुआ व्यक्ति था। उसकी इंसानियत जाग उठी थी। वह अब अपने नौकरों के प्रति उदार हो गया था।
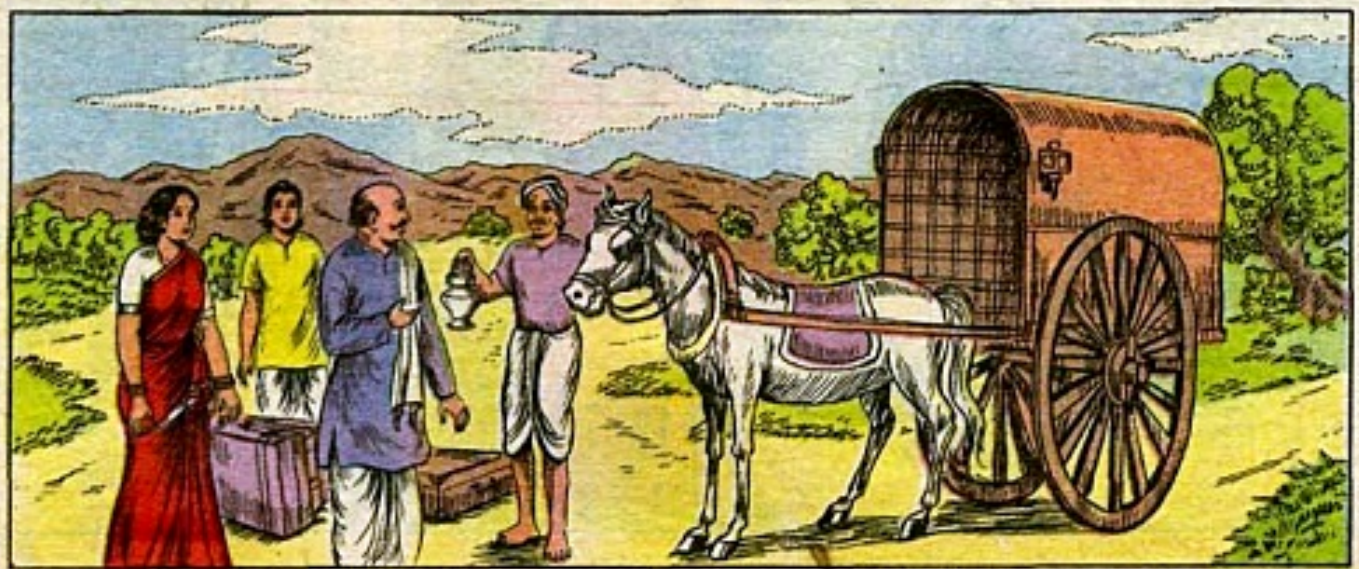
हिंसा

वह एक किसान था। वह जंगल के पास एक गांव में रहता था। एक दिन वह देर तक अपने खेत में काम करता रहा और घर लौट रहा था तो रास्ते में उसे बाघ की दहाड़ सुन पड़ी। उसने सर घुमाकर उसी दिशा में देखा। चार-पांच फुट की दूरी पर, दो पेड़ों के तनों के बीच, एक बाघ फंसा पड़ा था और वहां से निकलने के लिए छटपटा रहा था।

किसान डर गया। उसे लगा कि अगर बाघ वहां से बाहर निकल आया तो ज़रूर उसे मारकर खा जायेगा। इसलिए उसने सोचा कि इससे पहले कि बाघ अपने को मुक्त करके उस पर झपटे, उसकी खैरियत इसी में है कि वह बाघ का काम तमाम करे दे। इसलिए वह तुरंत बाघ के और निकट हो गया और उसकी पिछली टांगों को अपने काबू में करके उन्हें हंसिये से काटने की कोशिश करने लगा। बाघ किसान की पकड़ से अपनी टांगें छुड़ाने की कोशिश कर रहा था।

किसान अब चक्कर में पड़ गया। तभी उसे एक संन्यासी दीख पड़ा। वह भी उसी रास्ते से गुज़र रहा था। किसान ने उसे संबोधित करते हुए कहा, "स्वामीजी, आप देख ही रहे हैं मैं किस स्थिति में हूं। मैं इसी तरह बाघ की टांगें पकड़े रखूंगा। आप इस हंसिये से इसका सर काट लें।"

संन्यासी ने नकार में अपना सर हिलाया और कहने लगा, "मै हिंसा में विश्वास नहीं करता। मुझे क्षमा करो। मैं हथियार छुऊंगा भी नहीं।"

"ठीक है, आप हथियार नहीं छूते तो आप बाघ की टांगें पकड़ लें। मैं हंसिये से इसका काम तमाम कर दूंगा।" किसान ने सुझाव दिया।

संन्यासी ने बाघ की टांगें पकड़ लीं। किसान ने तुरंत अपना हंसिया संभाला और वहां से खिसकने को हुआ। किसान की इस हरकत पर संन्यासी सकते में आ गया। बोला, "ज़ा क्यों रहे हो, भाई? बाघ को कौन मारेगा?"

किसान ने बड़ी फुर्ती से उत्तर दिया, "आप की बात सुनकर मुझे हिंसा के प्रति विरक्ति हो गयी है, स्वामी जी। आप मुझे बाघ मारने के लिए कह रहे हैं। लेकिन यह ठीक नहीं होगा।" और इन शब्दों के साथ ही वह किसान अपने गांव की ओर बढ़ गया।

—राजेश कुमार

शिष्य भी गुरु होता है

राजा यशपाल के दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम श्रीधर था और छोटे का जलंधर। श्रीधर काफी तेज़-तर्रार था, लेकिन जलंधर अव्वल दर्जे का मूर्ख था। राजा यशपाल चाहता था कि उसके दोनों बेटे एक ही गुरु से शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए वह दण्डकारण्य में स्थित आचार्य संदीप के आश्रम में पहुंचा।

आचार्य संदीप ने राजा की इच्छा जानकर कहा, "मैं बूढ़ा हो चुका हूं। गुरुकुल का संचालन करने की शक्ति अब मुझ में नहीं रही। मेरे दो शिष्य राजधानी में ही रहते हैं। वे हैं बृहस्पति और शिलासंस्कारी। आप उनमें से किसी से संपर्क करें।"

राजा यशपाल पहले बृहस्पति से मिला। राजा की बात सुनकर बृहस्पति ने कहा, "मैं तब तक किसी को अपना शिष्य नहीं बनाता जब तक कि मैं उसकी परीक्षा न ले लूं। वह चाहे राजा की संतान हो या सीधे भगवान् की ही क्यों न हो। मैं धावी छात्र चहता हूं, मैं तगड़ी सूझ-बूझ वाले छात्र चाहता हूं।"

बृहस्पति की बात सुनकर राजा यशपाल को गुस्सा आ गया। फिर भी उसने अपने को काबू में रखा और वहां से चला आया। अब वह आचार्य संदीप के दूसरे शिष्य शिलासंस्कारी के यहां पहुंचा।

शिलासंस्कारी ने राजा यशपाल को पूरा सम्मान दिया और बोला, "गुरु वही होता है जो जड़ शिष्य को भी विज्ञ बना दे। इस के लिए उसे चाहे कितनी भी तकलीफ क्यों न उठानी पड़े यह उस का धर्म होता है। मैं अपने यहां आनेवाले किसी भी शिक्षार्थी को वापस नहीं भेजता, न ही मैं उसकी किसी तरह की परीक्षा लेता हूं। मैं हर किसी को शिक्षा दे सकता हूं।"

दोनों गुरुओं ने अपने-अपने ढंग से बात की थी। उसे सुनकर राजा यर्शपाल राजधानी को लौट गया राजधानी में पहुंचकर राजा ने अपने मंत्री को बुलवाया और उसे अपने अनुभव सुनाये। फिर उसने मंत्री से कहा, "मेरी राजधानी में अहंकारियों के लिए जगह नहीं होनी चाहिए। बृहस्पति को ऐसी उद्दंडता के लिए दण्ड मिलना ही चाहिए। उसे अच्छी तरह अपमानित भी क्या जाना चाहिए।

रजनी गोयल

मेरे मन को तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक कि तुम यह काम पूरा नहीं करते ।"

राजा की बात सुनकर मंत्री बोला, "इनके बीच स्पर्धा पैदा कर देनी चाहिए । शिलासंस्कारी तो मूर्खों को भी विद्वान बनाने की क्षमता रखता है । बृहस्पति ज़रूर अपमानित होगा और यह उसके लिए दण्ड भी हो जायेगा ।"

राजा ने ऐसा ही किया । पर महान गुरु के रूप में बृहस्पति ही उभर कर सामनें आया । राजा को आश्चर्य हुआ । उसने आखिर उससे पूछ ही लिया, "आचार्य, निस्संदेह आप बहुत बड़े पंडित हैं । पर आपका यह अहंकार कहां तक उचित है?"

बृहस्पति ने बड़ी विनम्रता से कहा, "मैं मानता हूं कि अहंकार किसी भी पंडित का गुण नहीं । मैंने जो कुछ भी किया, जान बूझकर किया । मैं जानता था कि आपके मन को ठेस लगेगी और आप स्पर्धा जैसा कोई आयोजन करेंगे । मैं चाहता तो अपने को महान कहला सकता था, लेकिन मेरे मन को संतोष तभी मिलता जब मैं इस स्पर्धा में आगे रहता ।"

बृहस्पति की बात सुनकर राजा खुश हो गया, और बोला, "आप में अहंकार नहीं है, यह जानकर मुझे खुशी हुई । साथ ही मुझे विश्वास है कि आप मेरे बेटों को अपना शिष्य बना लेंगे । कहिए, अब तो आपको कोई आपत्ति नहीं?"

"राजन् । यदि परीक्षा वाली बात आपको पसंद नहीं है तो आप अपने बच्चों को शिलासंस्कारी के यहां भेज सकते हैं ।" बृहस्पति ने अपनी बात फिर दोहरा दी ।

राजा यशपाल को फिर गुस्सा आ गया ।

शिलासंस्कारी तो बृहस्पति के मुकाबले में कहीं नहीं टिकता था : इसलिए इस तथ्य का उल्लेख करते हुए राजा ने बृहस्पति से फिर कहा, "क्या आप यह सोचते हैं कि राजा के पुत्रों में अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता नहीं होती?"

राजा का प्रश्न सुनकर बृहस्पति धीमे से मुस्करा दिया और बोला, "राजन्, गुरु के सामर्थ्य और उसके पांडित्य के बीच कोई संबंध नहीं । मैंने जितना अध्ययन किया है, उससे मुझे तृप्ति नहीं मिली । मैं और अध्ययन करने की इच्छा रखता हूं । इसीलिए मैं अपने यहां समर्थ शिष्यों को ही लेता हूं । उन्हें मैं जो कुछ पढ़ाता हूं, उसी से वे संतोष नहीं पा लेते । वे मुझसे तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं और उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मुझे अपनी बुद्धि पर जोर देना पड़ता है और ज्ञान की वृद्धि भी करनी पड़ती है । इससे कई नयी-नयी बातें सामने आती हैं । इसीलिए मेरी बुद्धि का निरंतर विकास होता रहा है और वह प्रखर से प्रखरतर होती गयी है । मेरे शिष्य ही मेरे गुरु हैं । शिलासंस्कारी की दूसरी बात है । वह अपनी बुद्धि का विकास नहीं चाहता, अपने विद्यार्थियों की बुद्धि का विकास चाहता है । इसके लिए वह कई प्रकार की तरकीबें सोचता रहता है । इसलिए पांडित्य में चाहे वह मेरी बराबरी पर नहीं आ पाया है, पर गुरु के रूप में वह मुझसे कहीं आगे है ।"

राजा यशपाल समझ गया था कि बुद्धिमान शिष्य से गुरु का ज्ञान बढ़ता है और बुद्धिहीन शिष्य के कारण गुरु का ज्ञान बढ़ता तो नहीं, पर इस से गुरु शिक्षा के कई नये-नये तरीके खोजता रहता है ।

अब सारी स्थिति राजा के सामने स्पष्ट थी । इसलिए श्रीधर को बृहस्पति के यहां और जलंधर को शिलासंस्कारी के यहां शिक्षा ग्रहण करने भेज दिया । इससे दोनों राजकुमार अपनी-अपनी तरह से उन्नति कर सके । शिक्षा पूरी करके जब वे वापस अपने यहां आये, तो वे राजकुमार बहुत बड़े विद्वान बन चुके थे ।
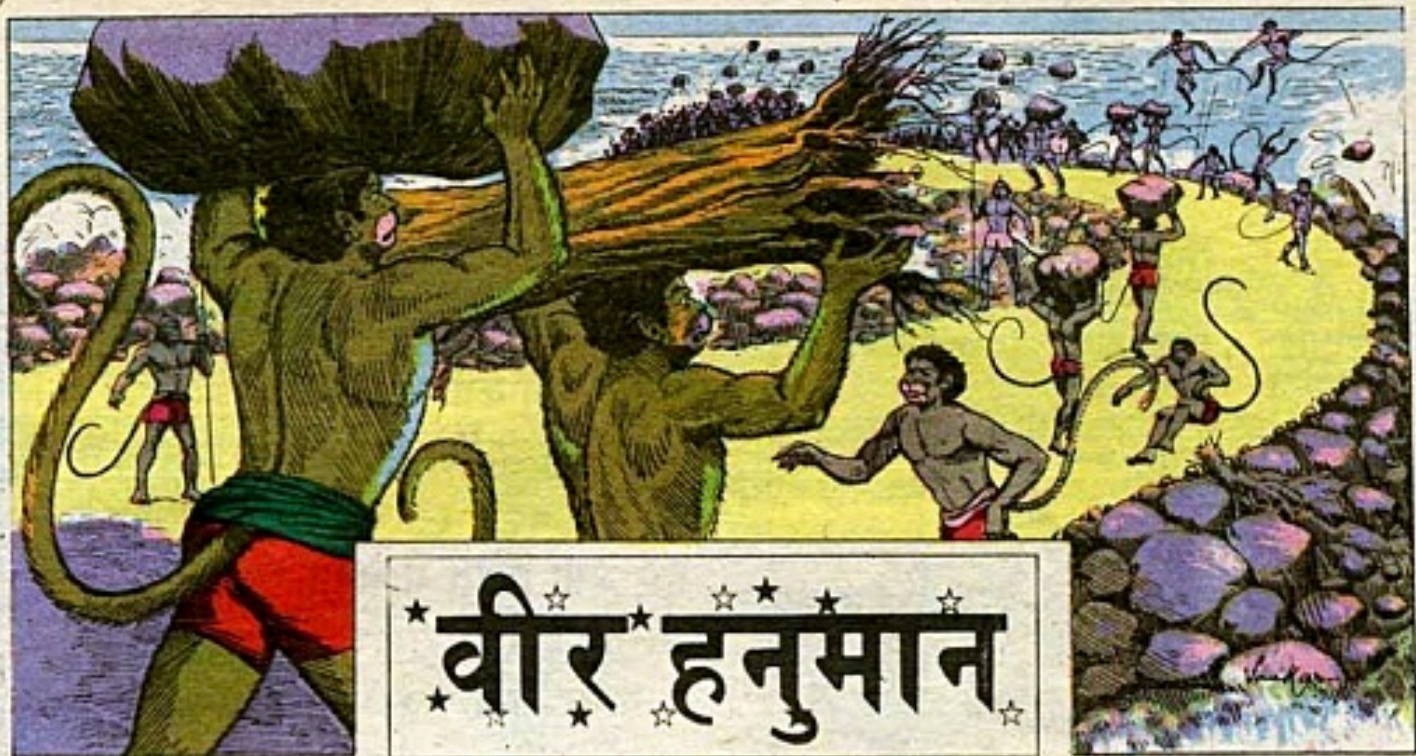
नल की बात सुनकर राम ने आदेश दिया और वानर झुंडों के झुंड जंगल की ओर बढ़ते गये और वहां से तरह-तरह के पेड़ उखाड़ कर उन्हें समुद्र में डालने लगे । कुछ वानर बड़ी-बड़ी चट्टानें उठाकर ले आये और उन्हें सागर में गिराते गये । इससे सागर का पानी बहुत ऊंचा हो गया और लगने लगा जैसे कि वह आकाश को छू रहा हो । उसमें ज़ोर की उछालें आ रही थीं ।

सागर पर सेतु का निर्माण शुरू हो चुका था । कुछ वानरों को डर था कि यह सेतु टेढ़ा-मेढ़ा न हो जाये । इसलिए वे इसकी सीध बनाये रखने के लिए रस्सियों का सहारा लेने लगे । कुछ के हाथों में मापने के यंत्र थे । इस सेतु को दस योजन चौड़ा और सौ योजन लंबा बनाया जाना था । यह काम पांच दिन तक चलता रहा । हर रोज बीस योजन की लंबाई पूरी हो रही थी । यह नल के सामर्थ्य का ज्वलंत प्रमाण था । ऐसी असाधारण सफलता हर किसी के वश की नहीं होती ।

निर्माण-कार्य पूरा हो जाने पर वानर मारे खुशी के बांवरे हो रहे थे । उन्होंने खूब उछल-कूद मचा रखी थी ।

सेतु राजमार्ग की तरह दिख रहा था । वह बहुत सुंदर था । वानर सेना उस पर चलकर सहज ही सागर को पार करने लगी । विभीषण सागर के उस पार अपनी गदा थामे पहले ही खड़ा था, जैसे कि शत्रु की प्रतीक्षा में हो । उसके साथ उसके

२१. वानर सेना का लंका में प्रवेश

समुद्र के उस पार भी पेड़ फलों से लदे हुए थे। जंगल भी हरे-भरे थे। इसलिए वानर सेना को रुकने में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन राम नहीं चाहते थे कि वानर सेनाएं वहां कहीं रुकें।

उनका आदेश था कि वे सीधे लंका नगरी की ओर बढ़ें। इसलिए वानर सिंहनाद करते हुए उसी दिशा में बढ़ते रहे। उनका यह उत्साह देखकर राम बहुत प्रसन्न थे।

वानर सेना लंका नगरी के बाहर पहुंच कर ही रुकी। वहां लंका नगरी में वाद्य-यंत्रों और मृदंगों की ध्वनि स्पष्ट सुन पड़ रही थी। राक्षसों की हलचलों का आभास भी स्पष्ट मिल रहा था। ये ध्वनियां सुनकर वानर क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने उन ध्वनियों से बढ़कर अपनी ध्वनियां पैदा करनी शुरू कर दीं जो बड़ी भयंकर थीं।

नगरी में ध्वज-स्तंभों पर तरह-तरह की पताकाएं फहरा रही थीं। उन्हें देखकर तथा सीता का स्मरण करके राम दुखी दीखने लगे।

उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "त्रिकूट पर्वत पर निर्मित इस लंका नगरी को देखो। इसका निर्माण स्वयं विश्वकर्मा ने किया था।"

फिर उन्होंने निर्देश दिये कि कैसे वानर सेना 'व्यूह रचना' करेगी। साथ में यह भी निर्देश दिया कि अंगद को नील-समेत अपनी टुकड़ी को व्यूह के बीचों-बीच रखना चाहिए। ऋषभ और उसकी सना की टुकड़ी

चारों अनुचर भी थे।

राम और लक्ष्मण को हनुमान और अंगद ने अपने-अपने कंधों पर उठा रखा था। सुग्रीव नहीं चाहता था कि वे पैदल सेतु पर चलें। वास्तव में हनुमान और अंगद ने उन्हें आकाश-मार्ग से पार पहुंचा दिया। कुछ और शक्तिशाली वानर भी आकाश-मार्ग से ही सागर पार पहुंचे। यह वानर-सेना भारी संख्या में थी। इसलिए उनमें कभी-कभी आपस में धक्कम-धक्का भी हो जाता था। इससे कुछ वानर सागर में गिर पड़े, लेकिन फिर वे संभल कर बाहर आ गये और सेतु पर चलने लगे। वानर सेना के इस कोलाहल में सागर की लहरों की आवाज़ बिलकुल सुनाई नहीं पड़ रही थी।

दायें पार्श्व में रहेगी। गंधमादन अपनी टुकड़ी के साथ बायें पार्श्व में रहेगा। राम और लक्ष्मण व्यूह के आगे-आगे रहेंगे। सुग्रीव सेना के पिछले भाग में रहेगा।

पूरी वानर सेना गरुड़ व्यूह में रची गयी थी। लंका पर आक्रमण करके उसे तहस-नहस करने के लिए वानर उतावले हो रहे थे।

राम ने सुग्रीव को आदेश दिया, "रावण के दूत शुक को अब छोड़ दो।"

शुक को वानरों ने तरह-तरह की यातनाएं दी थीं। उसे अपनी जान का डर था। सुग्रीव ने जैसे ही उसे छोड़ा, वह तुरंत वहां से उड़ा और रावण के पास जा पहुंचा।

रावण ने शुक को देखते ही व्यंग्य किया, "लगता है तुम्हें वानरों ने बख्शा नहीं। तुम्हारी यह क्या गत बन गयी है! तुम्हारे पंख कहां गये?"

शुक ने समूचा विवरण देते हुए रावण से कहा, "मैंने सागर पार जाकर सुग्रीव से हू-ब-हू वही सब बातें कह दीं जिनके लिए आपने मुझे आदेश दिया था। इसपर वानर गुस्से में आ गये और उन्होंने मुझे पकड़ कर सताना शुरू कर दिया। उन्होंने केवल मेरी ही बातें सुनीं, स्वयं कुछ नहीं बोले। ऐसे में मैं उनसे किस उत्तर की अपेक्षा करता? वे मूर्ख तो हैं ही, गुस्सैल और चिड़चिड़े मिजाज़ के भी हैं। उन्होंने सागर पर पुल बांध लिया है और उसे पार करके लंका नगरी के द्वार पर आ पहुंचे हैं। भालू और वानर लंक नगरी के द्वार के आस-पास ऐसे फैले हुए हैं जैसे धरती ने असंख्य वानरों
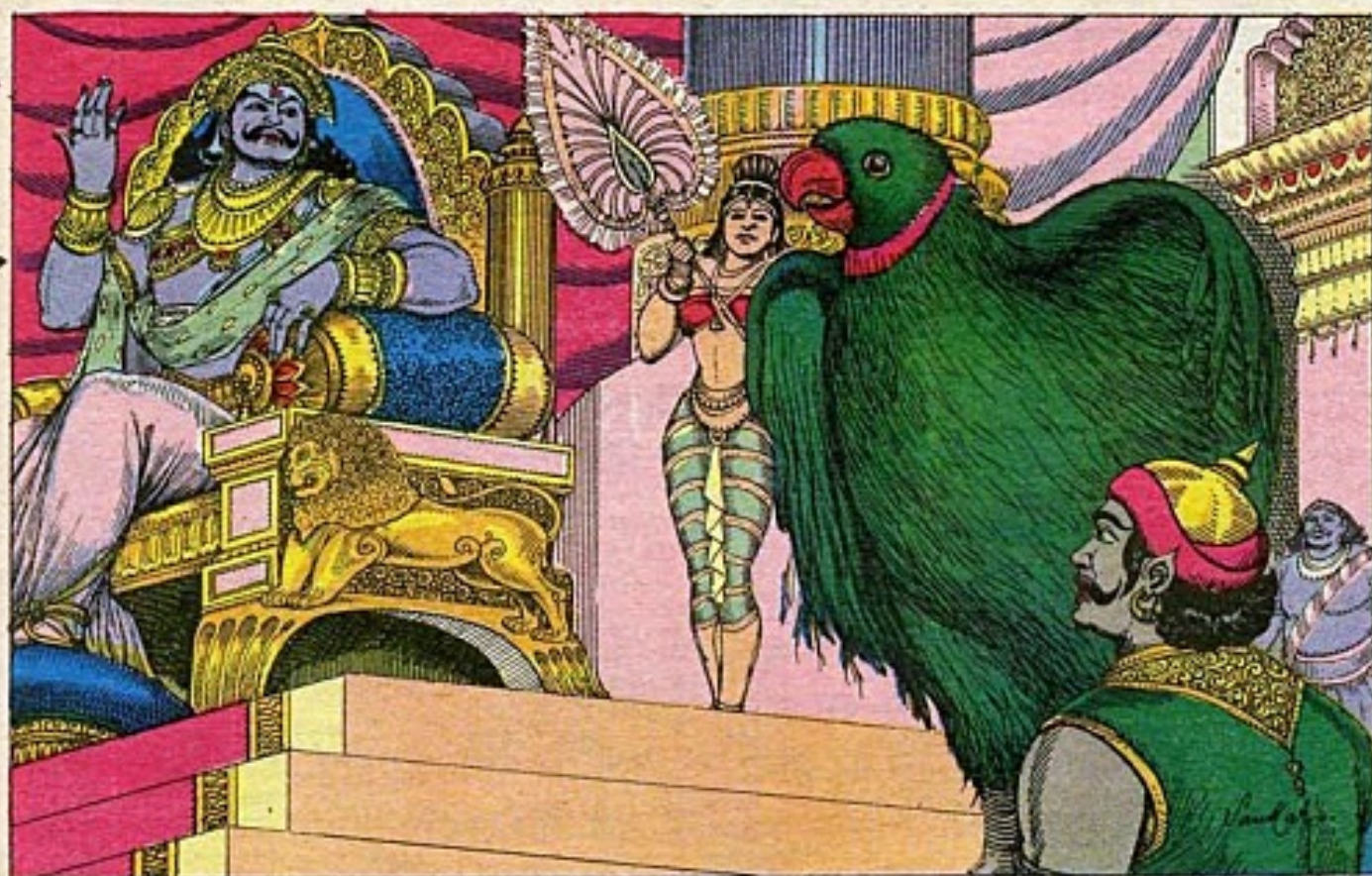
और भालुओं को एकदम उगल दिया हो। राक्षसों और वानरों के बीच अब युद्ध अवश्य होगा। वानर अब किसी भी क्षण लंका के प्राचीरों पर चढ़ सकते हैं। अब आपके सामने एक ही विकल्प है—या तो आप सीता को लौटा दें, या राम से युद्ध करें।"

शुक की बातें सुनकर रावण की आखें अंगारा बन गयीं। बोला, "यदि तीनों लोक मुझ पर एकसाथ भी आक्रमण कर दें, तब भी मैं सीता को नहीं लौटाऊंगा। बहुत समय से मैंने युद्ध नहीं किया है। युद्ध करने की मुझ में उत्कट इच्छा है। राम बेचारा यह हकीकत नहीं जानता। इसीलिए वह मुझ पर आक्रमण करने आया है। उसे मेरे बाणों की शक्ति का अनुमान नहीं। अब उसे अनुमान हो जायेगा।"

अपनी बात जारी रखते हुए वह कहता गया, "सागर पर सेतु का निर्माण करना कोई साधारण बात नहीं। मुझे इस पर विश्वास नहीं होता।" फिर उसने सारण को संबोधित करते हुए कहा, "तुम गुप्त रूप से जाओ और देखो क्या सचमुच सागर पर सेतु का निर्माण हुआ है। और यदि यह सच है तो यह पता लगाओ कि वानर सेना कितनी है, और राम के पास क्या-क्या अस्त्र हैं।"

सारण ने वानर-रूप धारण कर लिया और वानर सेना में जा मिला। लेकिन वह सेना इतनी विशाल थी कि उसका हिसाब लगा पाना असंभव था। वह जैसे कि दिग्-दिगंत में फैली हुई थी। कुछ वानर तो अब भी सेतु से सागर पार करते दिखाई दे रहे थे। इतने में विभीषण ने सारण को पहचान लिया और उसे पकड़ कर राम के हवाले करते हुए बोला, "यह वानर नहीं, राक्षस है और मैं जानता हूं, यह रावण का मंत्री है। वानर-रूप धारण करके यह हमारे रहस्य जानने आया है।"

तब सारण ने झुक कर राम को प्रणाम किया और यह बात स्वीकार की कि वह रावण का दूत है और यहां उसी उद्देश्य से आया था जिसका विभीषण ने वर्णन किया है।

इस पर राम हंस दिये और बोले, "ठीक है, तुम लोग अपनी तसल्ली कर लो। अच्छी

तरह हमारी सेना का अंदाज़ा ले लो और रावण को जाकर खबर दे दो । अगर तुम स्वयं यह काम पूरा नहीं कर सकते तो विभीषण तुम्हारी मदद करेगा । तुम बिना किसी अस्त्र के हो, इसलिए तुम पर कोई वार नहीं करेगा ।''

फिर उन्होंने विभीषण को आदेश दिया कि उसे छोड़ दिय जाये । उसके द्वारा रावण को एक संदेश भी भेजा गया, ''रावण, कल सुबह तुम मेरे क्रोध का स्वाद चखोगे । यह वज्रायुध की तरह तुम पर आ पड़ेगा ।''

सारण ने राम का जय-जयकार किया और फिर रावण के पास पहुंच कर बोला, ''राजन्, वानर सेना में मैं प्रवेश पा गया था । लेकिन विभीषण ने मुझे पहचान लिया और पकड़ कर राम के सामने पेश कर दिया । राम ने दया करके मुझे छोड़ दिया । वानर सेना के साथ राम, लक्ष्मण, विभीषण और सुग्रीव हैं । अपने आप में यह एक बहुत बड़ी शक्ति है । राम के बाणों को देखकर लगता है कि उन्हें किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं । काफी सेना तो सागर पार कर चुकी है और काफी अभी कर रही है । वह इतनी विशाल है कि उसका कोई आर-पार नहीं । वानरों में युद्ध के लिए अभूतपूर्व उत्साह है । इसलिए आप उनसे युद्ध की बात न सोचें, बल्कि सीता को लौटा दें । हमारी भलाई इसी में है ।''

रावण के स्वर में कठोरता थी । बोला, ''मैं सीता को नहीं लौटाऊंगा । तुम वीर नहीं, कायर हो । वानर सेना को देखकर तुम भयभीत हो गये हो । क्या कभी कोई

युद्ध में मुझे जीत सका है?"

रावण के मन में अब वानर सेना को स्वयं देखने की इच्छा जगी। वह अपने मंदिर की सबसे ऊपर की मंज़िल पर जा पहुंचा और चारों ओर देखने लगा। वाकई, हर कहीं वानर ही वानर थे। पहाड़ और जंगल उनसे अटे पड़े थे। वह सारण से बोला, "तुम ठीक ही कहते हो। यह सेना बहुत विशाल है। पर यह बताओ कि उनमें सही अर्थ में साहसी और वीर कौन हैं, इनके प्रधान सेना-नायक कौन हैं, और सुग्रीव के सलाहकार कौन हैं?"

सारण का उत्तर इस प्रकार था, "वानर सेना का नायक नील है। अंगद वानर देश का युवराज है। वह वालि का पुत्र है और वालि के समान ही बलशाली है। हनुमान को हम पहले से ही जानते हैं। सेतु का निर्माण नल ने किया है। वह भी महान पराक्रमी है। उसके साथ जो उसकी टुकड़ी है, वह अजेय है। वह सफेद रंग वाला वानर श्वेत है। युद्ध में वह भयंकर हो जाता है। लाल-पीले रोयों की पूंछ वाला वानर कुमुद है। वह बड़ा ही निर्दयी है और हमेशा युद्ध के लिए उतावला रहता है।"

इसके बद रावण को रंभ, शरभ और पनस के बारे में बताया गया। ये तमाम वानर महान योद्धा थे। रावण को अन्य वानर सेना-अधिपतियों के बारे में भी बताया गया। फिर रावण को भल्लूक प्रमुखों के बारे में भी बताया गया। भल्लूक प्रमुखों का प्रमुख जांबवंत था।

कुछ ब्योरा शुक ने भी दिया। उसने राम और लक्ष्मण की ओर संकेत किया, हनुमान वहीं उनके पास खड़ा था। वहां रावण का छोटा भाई विभीषण भी था।

एक क्षण के लिए रावण डर गया। फिर वह डर क्रोध में परिवर्तित हो गया। सबसे पहले तो रावण ने शुक और सारण को फटकारा कि वे शत्रु पक्ष का इतना बढ़ा-चढ़ा कर बखान कर रहे हैं। फिर बोला, "तुम जैसे मंत्रियों के होते तो मुझे बहुत पहले डूब मरना चाहिए था। धिक्कार है तुम्हें। तुम्हारे पहले कार्यों को याद करके ही मैं तुम्हारी जान बख्श रहा हूं। अब तुम यहां से दफा हो जाओ।"

शुक और सारण रावण का जयकार करते हुए वहां से हट गये । इसके बाद रावण ने महोदर से कहकर कुछ गुप्तचरों को बुलवाया और उन्हें आदेश दिया कि राम के बारे में पूरी-पूरी जानकारी लेकर आयें ।

गुप्तचरों ने छद्‌मवेश धारण कर लिया और सुवेल पर्वत पर जा पहुंचे । वहीं पर राम, लक्ष्मण, विभीषण और सुग्रीव ने डेरा डाल रखा था । उन्हें देखते ही गुप्तचरों को कंपकंपी आ गयी । विभीषण की जैसे ही उन पर नज़र पड़ी, उसने उन्हें पहचान लिया और उन्हें अपने कब्ज़े में ले लिया ।

गुप्तचरों में एक शार्दूल था । वह बड़ा दुष्ट था । वानर उन्हें मारने ही जा रहे थे कि राम वहां आ गये और उन्होंने शार्दूल के साथ दूसरे गुप्तचरों को भी छुड़वा दिया । किसी तरह उनकी जान बच गयी थी । इसीलिए वे लंका को लौट गये ।

शार्दूल को देखते ही रावण समझ गया कि ज़रूर कुछ असाधारण घटा है ।

शार्दूल ने रावण से कहा, "वानरों की संख्या के बारे में अनुमान लगाना किसी के बस का नहीं । हमें विभीषण के अनुचरों ने पकड़ लिया था । उन्होंने हमें बहुत सताया । यदि राम वहां न पहुंचते तो हम अपनी जान से भी हाथ धो बैठते । लंका पर हमला करने के लिए राम तैयार हैं । आपको अब निर्णय लेना ही होगा-या तो आप सीता को लौटा दें या युद्ध के लिए तैयार हो जायें ।"

रावण अभी ज़िद्द पर अड़ा रहा । उसने फिर कहा कि वह सीता को किसी कीमत पर नहीं लौटायेगा । उसने शार्दूल से भी वानर प्रमुखों के बारे में जानकारी ली । इसके बाद वह विद्युतजिह्व नाम के राक्षस को अपने साथ लेकर सीता को देखने निकला । विद्युतजिह्व से रावण ने कहा, "तुम अपनी माया से राम के सर का सृजन करो । तुम धनुष और बाणों का भी सृजन करो । इससे हम सीता को सहज ही धोखे में ले आयेंगे ।"

विद्युतजिह्व ने वैसा ही करने की हामी भर दी । रावण ने उसे अपना एक आभूषण पुरस्कार में दिया ।

योग्य वर का चुनाव

कई साल पहले चीन के एक गांव में एक ज़मींदार रहता था। उसके एक ही बेटी थी। वह सुंदर तो थी ही, साथ ही गुणवान भी थी, क्योंकि उसने समर्थ गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की थी।

उससे शादी करने के लिए तीन संपन्न परिवारों से तीन युवक आये। ज़मींदार ने उन तीनों युवकों से अनेक प्रश्न पूछे, कई प्रकार से उन्हें परखा और आखिर इस नतीजे पर पहुंचा कि वे तीनों ही युवक एकसमान प्रतिभावान हैं। इसलिए उसके मन में आया कि वर चुनने का दायित्व बेटी पर ही छोड़ देना ठीक होगा, और यह बात उसने अपनी बेटी से कह दी।

पिता की बात सुनकर बेटी ने अपनी रजामंदी दे दी। पर कई दिन और कई महीने बीत गये, और ज़मींदार की बेटी कोई भी निर्णय न ले पायी। वह बराबर असमंजस में रही कि किसे चुना जाये। फिर इत्तफाक ऐसा हुआ कि वह अचानक बीमार पड़ गयी और चिकित्सा के बावजूद मर गयी। उसकी मौत की खबर पाकर उस से शादी करना चाहनेवाले वे तीनों युवक विक्षिप्त से हो गये। उनके दुःख का पारावार न था।

खैर, उन तीनों ने उसकी लाश को एक सुंदर बगिया के बीच दफना दिया और उस पर संगमरमर की एक समाधि बनवा दी।

उन युवकों में से एक युवक दिन-रात उसी समाधि के पास बैठा रहता और फूलों से उसे सजाता रहता।

दूसरा युवक ज़मींदार के घर में ही रहकर, बेटी की अकाल मृत्यु से तड़पनेवाले दुखी ज़मींदार की खूब सेवा करने लगा।

तीसरा युवक तो पूरे संसार से ही विरक्त हो गया था, और उस विरक्ति में संन्यासी

चीन की लोककथा

बनकर, महात्माओं को ढूंढ-ढूंढकर उनसे ज्ञान प्राप्त करने लगा था ।

एक दिन इस संन्यासी युवक को पता चला कि एक गांव में एक महान पंडित रहता है जो सब शास्त्रों में पारंगत है और अद्‌भुत शक्तियों का स्वामी है । वह उसी पंडित के पास पहुंचा । पंडित ने संन्यासी युवक के सभी प्रश्नों का आदर के साथ उत्तर दिया, और भोजन के समय उसे अपने पास बिठाकर भोजन कराने लगा ।

जिस समय वे दोनों भोजन कर रहे थे, उस समय पंडित का दस-वर्षीय पुत्र वहां आ पहुंचा और पिता से तरह-तरह की मांगें करने लगा । जिद्दी पुत्र से पंडित बहुत परेशान हो उठा ।

कुछ देर तक तो वह उसे बर्दाश्त करता रहा, लेकिन फिर उसे उस-पर बेहद गुस्सा आ गया । एकदम उसके मुंह से निकला, "जा, मर, दफा हो ।" और उसने न आव देखा न ताव, लड़के को जलते चूल्हे में धकेल दिया ।

देखते-देखते पंडित का पुत्र जलते चूल्हे में जलकर राख हो गया ।

पंडित की इस हरकत से युवा संन्यासी सकते में आ गया । उसे लगा जिसे वह महान पंडित मान बैठा था, वह एकदम निर्दयी है और किसी राक्षस से कम नहीं ।

उसने पंडित से कहा, "महोदय, जब मैंने लोगों से यह सुना कि आप महापंडित हैं और अद्‌भुत शक्ति के स्वामी हैं तो मैंने वह सब सच मान लिया । लेकिन अभी आपने जो क्रूरता दिखायी है, उससे यह साबित हो गया है कि आप पूरे राक्षस हैं और बहुत ही अधम हैं । अब मैं आपका असली रूप जान गया हूं और इस वक्त आप से घृणा करता हूं ।"

संन्यासी की बातें सुनकर पंडित धीरे-से मुस्कराया और बोला, "लोगों का असली स्वभाव तभी जाना जा सकता है जब वे गुस्से में हों । सच यही है । लेकिन मेरे बारे में तुम्हारा अनुमान ठीक नहीं । अज्ञानवश बहुत मामूली-सी बात भी तुम्हें विचित्र और अमानुषिक लग रही है । पर इसमें हैरानी की कोई बात नहीं । कभी-कभी ऐसा होता ही है ।"

"क्या कहते हैं आप? आपने कितनी बेरहमी से अपने बेटे को आग में धकेल दिया और उसकी जान ले ली। क्या यह कोई छोटी घटना है? आप तो मनुष्य रूप में साक्षात राक्षस हैं।"

संन्यासी की बात से पंडित को गुस्सा नहीं आया। उसने केवल ज़ोर से एक मंत्र का उच्चारण किया और साथ ही चुटकी बजायी। उसका चुटकी बजाना था कि दूसरे ही क्षण उसका बेटा आग की लपटों में से हंसता हुआ बाहर चला आया और पिता के गले लग गया। यह वाकई एक अद्‌भुत घटना थी। संन्यासी युवक हतप्रभ रह गया। उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल पाया। वह उस पंडित के पांवों पर गिर पड़ा और बोला, "महात्मा, मुझसे भूल हुई, मेरे कठोर शब्दों के लिए मुझे क्षमा करें।"

पर उस पंडित ने अपने बेटे को ज़िंदा करने के लिए जो मंत्र पढ़ा था, वह उसने याद कर लिया और सीधा ज़मींदार के बेटी की समाधि पर जा पहुंचा। समाधि पर पहुंच कर उसने उसी मंत्र का उच्चारण किया।

उसने जैसे ही मंत्र बोलना शुरू किया, वैसे ही ज़मींदार की बेटी उस समाधि में से उठकर खड़ी हो गयी। वह बिलकुल स्वस्थ दिख रही थी और सौंदर्य से भरपूर थी। उसके चेहरे पर पहले जैसी ही कांति थी और वह धीमे-धीमे मुस्करा रही थी।

ज़मींदार को जब पता चला कि उसकी बेटी ज़िंदा हुई तो वह बहुत खुश हुआ। वह भी वहीं समाधि पर आ पहुंचा और उसने
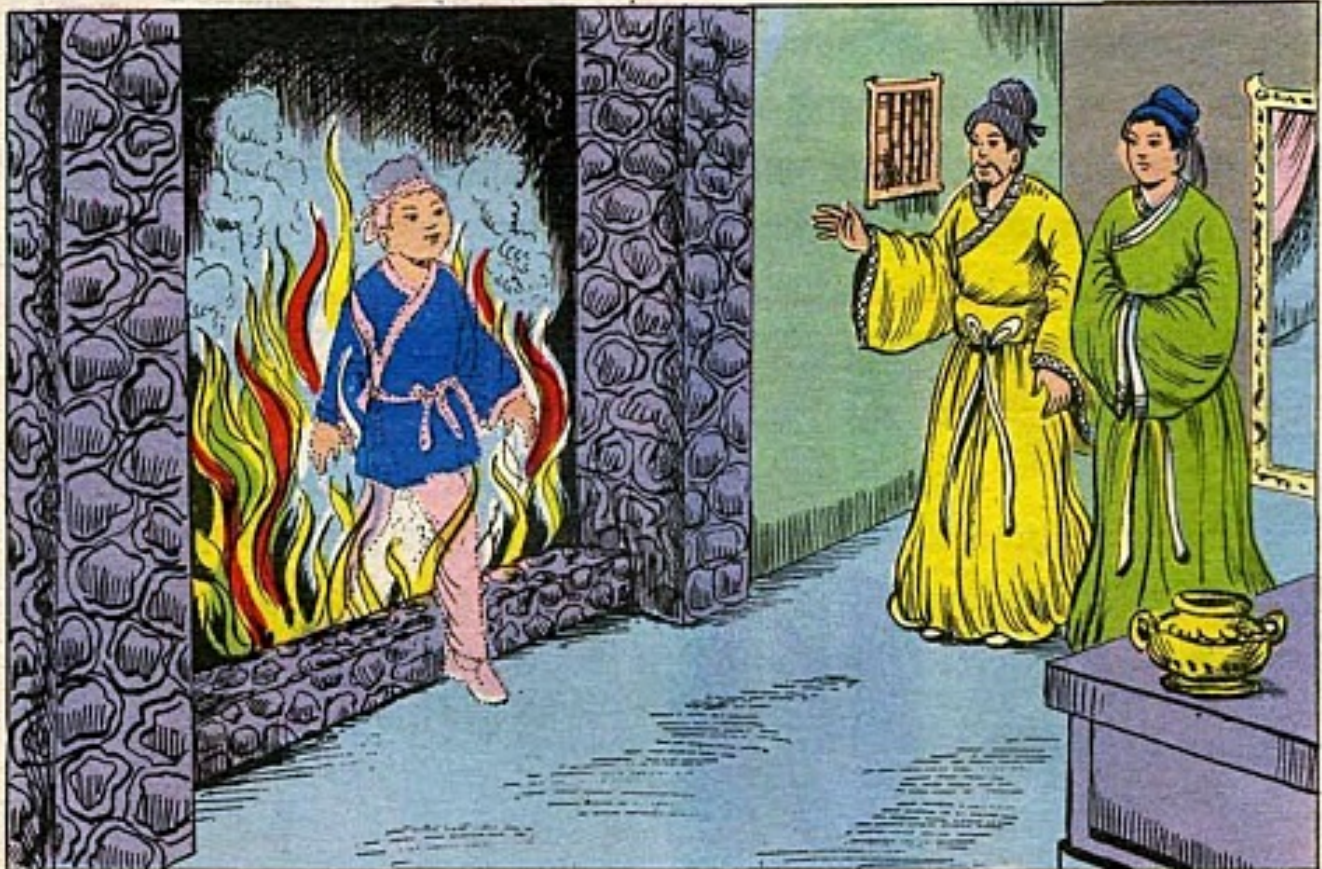
अपनी बेटी को वह सब कुछ कह सुनाया जो इस अवधि में बीता था । अंत में वह उससे बोला, "बेटी, अपने लिए वर चुनने में अब देर मत करो । इन तीनों में से जिसे तुम पसंद करोगी, मैं उसी से तुम्हारा विवाह कर दूंगा ।"

इससे पहले कि ज़मींदार की बेटी कुछ कहती, उन युवकों में से एक बोला, "तुम्हारे लिए मैं ही योग्य हूं, क्योंकि मैंने तुम्हारी समाधि के पास रात-दिन एक करके, धूप-वर्षा की चिंता किये बिना, अपने को होम दिया ।"

दूसरा युवक बोला, "तुम्हारे मरने के बाद मैं तुम्हारे पिता के पास ही रहा और उनका सहारा बनकर आज तक उनकी सेवा करता आया हूं । इसलिए तुम मुझे स्वीकारो ।"

अब बारी तीसरे युवक की थी, "तुम्हारी मृत्यु हो जाने पर मैं इस कद्र उद्विग्न था कि मैं इस संसार से ही विरक्त हो गया और संन्यासी बनकर गांव-गांव भटकता रहा । फिर मैंने एक महान पंडित से एक अद्भुत मंत्र सीखा और उसी के बल पर मैंने तुम्हें ज़िंदा किया । इसीलिए तुम्हारा पति बनने का मैं ही हकदार हूं ।"

तीनों युवकों की बारी-बारी से बातें सुनकर ज़मींदार की बेटी हंस पड़ी और बोली, "मेरे मरने के बाद मेरे पिता की सेवा में जो लगा रहा, वह उसके पुत्र-समान कहलायेगा । जिसने मुझे मंत्र के बल पर पुनर्जन्म दिया, वह मेरे लिए पिता समान होगा, और जिसने मेरी समाधि के पास बैठकर दिन-रात मेरी देखभाल की और मेरे लिए असीम दुःख में डूबा रहा, वही मेरा पति हो सकता है, क्योंकि वह मुझे इतना प्यार करता था कि मेरे सिवा उसे और कुछ सूझता ही नहीं था । उसने मेरी समाधि को ही मेरा स्वरूप समझ लिया था । इसलिए मैं उसी से शादी करूंगी ।"

ज़मींदार अब वाकई बहुत खुश था । उसकी बेटी ने अपने लिए वर चुन लिया था । इसलिए उसने बड़ी धूम-धाम से उसका विवाह उस युवक के साथ कर दिया ।

प्रतिभा खिल उठी

चिदानंद एक महान् पंडित था । अपने शिष्यों के रूप में वह उन्हीं को लेता था जिन्हें वह पसंद करता था, पर दीन-दुखियों की वह खूब मदद करता था ।

उधर एक कवि था । उसका नाम तामस था । वह सोचता था कि वह बड़ी उच्च कोटि की कविताएँ रचता है । एक बार वह राजा के यहां गया और उसे उसने अपनी कविताएं सुनायीं । राजा ने उसे सलाह दी, "निस्संदेह, तुम प्रतिभा-संपन्न कवि हो, लेकिन तुम उस हीरे के समान हो जिसे तराशा नहीं गया है । अच्छा हो तुम चिदानंद की मदद लो । वह देख ले, तब तुम इन्हें मेरे पास लाना ।"

राजा की सलाह मानकर तामस चिदानंद के यहां गया और उसे सारी बात कह सुनायी । चिदानंद ने उसे भरपूर सम्मान दिया और बोला, "तुम अपना यह काव्य मेरे पास छोड़ जाओ । मैं इसे देखकर तुम्हें वापस भिजवा दूंगा ।"

तामस को ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा । दो दिन में ही उसकी रचनाएं उस तक पहुंच गयीं । चिदानंद ने उसमें काफी परिवर्तन किये थे ।

अपने काव्य में इतने भारी परिवर्तन देखकर तामस चिढ़ गया और वह तुरंत चिदानंद के यहां जा पहुंचा । "आपने तो गज़ब कर दिया । परिवर्तन क्या किये, मेरे भावों को कहीं बदल डाला । कहीं-कहीं तो अर्थ का अनर्थ हो गया है । यह तो आपका काव्य ही कहलायेगा ।"

तामस की बात सुनकर चिदानंद को हंसी आ गयी । धीमे से मुस्कराते हुए बोला, "वत्स, मैं मानता हूं तुम में प्रतिभा है । तुम्हारे भाव भी एक से एक बढ़कर हैं । अनुभव के अभाव में तुम यह नहीं समझ

रश्मि वर्मा

पा रहे कि किस भाव को प्राथमिकता मिलनी चाहिए, और किसे नहीं । इसलिए सब कुछ असंबद्ध लग रहा है । तभी राजा ने तुम्हें मेरे पास भेजा है । मैंने जिस भाव को प्राथमिकता दी है, वह तुम्हारा ही है । इसलिए यह काव्य भी तुम्हारा ही है, मेरा नहीं । इन परिवर्तनों को स्वीकार करना तुम्हारे हित में है ।"

तामस ने दिखावे की विनम्रता दिखाते हुए कहा, "माना कि मेरे अनुभव अभी परिपक्व नहीं हैं, पर मुझे विश्वास है कि मुझ में इतनी परिपक्वता है कि मैं अपनी रचनाओं में मौलिकता को बनाये रख सकूं । अब पता नहीं आपने जो परिवर्तन किये हैं, वे कहां तक ठीक हैं!"

चिदानंद चुप रहा । उसने उत्तर नहीं दिया । तब तामस फिर बोला, "महोदय, मेरे प्रश्नों के उत्तर आपके पास हैं ही नहीं । इसीलिए आप मौन हैं । ठीक है न?" उसके स्वर में गर्व था ।

चिदानंद पहले की तरह ही धीर-गंभीर बना रहा । बोला, "वत्स, तुम्हें मैं पहले ही उत्तर दे चुका हूं । उसी में तुम्हारे दूसरे प्रश्न का भी उत्तर है । काश कि तुम यह समझ पाते । अब मैं तुम्हें और समझाऊं भी तो कोई लाभ नहीं होगा । एक ही प्रश्न को उलट-पलट कर पूछना तुम्हारे स्वभाव में होगा, पर एक ही प्रश्न का बार-बार उत्तर देना मेरे स्वभाव में नहीं है ।"

तामस ने भी उसी प्रकार उत्तर दिया, "शायद आपको मुझ पर गुस्सा आ गया है । मैं मानता हूं कि आपने जो परिवर्तन किये, वे अद्भुत हैं, पर वे मेरी रचना के अनुकूल नहीं । चिंता अब मेरी यह कैसे दूर होगी, यह मैं समझ नहीं पा रहा ।"

"अपने काव्य पर जब राजा की प्रशंसा पाओगे तो तुम्हरी चिंता अपने आप दूर हो जायेगी ।" चिदानंद ने अपनी बात समझाते हुए कहा, "तब तुम सहज ही मान जाओगे कि तुम्हारे किसी भी भाव को ठेस नहीं पहुंची है । हां, यदि तुम्हारी चिंता तब भी वैसे ही बनी रहे, तो समझ लो कि तुम अहंकार के शिकार हो । आत्म-विश्वास एक चीज़ है । उसका होना ज़रूरी है । पर जब अहंकार आड़े आने लगे तो समझ लो कि

तुम्हारी प्रगति का पथ रुक गया । पहले जीवन में कुछ-न-कुछ साध लो । फिर यह अहंकार पालो । तब शायद यह तुम्हारे लिए अलंकार-सदृश हो । पर अभी तो तुम्हें इसे तिलांजलि देनी पड़ेगी । इसे तिलांजलि दे दोगे तो तुम्हारी चिंता भी मिट जायेगी ।''

''महोदय, कहीं ऐसा तो नहीं कि आप मेरे आत्म-विश्वास को मेरा अहंकार मान रहे हैं, और इसी से मुझे चक्कर में डाल रहे हैं?'' तामस ने फिर प्रश्न किया ।

''वत्स! तुम में आत्म-विश्वास है कहां? यदि तुम में वह रहता तो तुम राजा की सलाह पर मेरे पास न आते । किसी दूसरे राजा को वह काव्य सुनाने की कोशिश करते ।'' चिदानंद ने कहा ।

''भविष्य में मैं एसा ही करूंगा । पर क्या आप मुझे अपनी प्रशंसा के योग्य समझते?'' तामस ने फिर प्रश्न किया ।

''नहीं । केवल तुम पर दया दिखाता और कहता कि तुम अपने अहंकार के कारण अपनी प्रतिभा को प्रकाश में नहीं आने दे रहे । अपने को महान् समझना आत्म-विश्वास नहीं कहलाता । किसी एक दिन महान बनने की बात पर विश्वास करना ही आत्म विश्वास कहा जाता है ।'' चिदानंद का उत्तर था ।

तामस चुपचाप वहां से चला गया और सीधा राजा के यहां पहुंचा । राजा ने जब उसके काव्य को सुना तो उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सका । तब तामस ने चिदानंद द्वारा किये गये परिवर्तनों की ओर इशारा किया और बोला, ''यह सब उन्हीं महान पंडित के कारण है । उन्होंने मेरे काव्य का ऐसा परिमार्जन किया कि यह चमक उठा है । इसी से आप इसकी प्रशंसा कर पाये ।''

राजा ने तामस की विनम्रता पर प्रसन्नता प्रकट की और उसे पुरस्कार देकर सम्मानित किया । अब तामस का अहंकार जा चुका था । इससे वह अपनी कमियां पहचानने लगा था और उसकी प्रतिभा में निखार आने लगा था । शीघ्र ही वह राज्य में एक श्रेष्ठ कवि के रूप में जाना जाने लगा ।

न्याय का स्वरूप

हजार वर्ष पहले अवंती राज्य पर राजा अनूप का शासन था । उसके राज्य में एक महान् राज-ज्योतिषी था ।

वह राज-ज्योतिषी सूर्योदय के समय नदी में स्नान करके घर लौट रहा था कि एक कौए ने उस पर बीट कर दी ।

राज-ज्योतिषी को कौए पर बहुत गुस्सा आया । उसने उसी क्षण कसम खायी कि जब तक वह कौओं की जाति को नष्ट नहीं कर देगा, चैन नहीं लेगा ।

राज-ज्योतिषी ने कसम तो खा ली थी पर उसे पूरा कैसे किया जाये? इत्तफाक से परिस्थितियां उसके अनुकूल थीं ।

राजा के महल के पास ही एक झोंपड़ी थी । उस झोंपड़ी में एक बूढ़ा रहता था । एक दिन उसने आंगन में धान सुखाने के लिए फैला दिया और खुद झपकी लेने लगा ।

पास ही कहीं से एक गधा चला आया । उसने देखा कि बूढ़ा सो रहा है । उसने वक्त का फायदा उठाया और लपककर धान खाने लगा । बूढ़े की आंख खुल चुकी थी । उसने हर तरह से कोशिश की कि गधा हट जाये, पर वह टस से मस नहीं हुआ ।

अब बूढ़े को भी गधे पर बहुत गुस्सा आ गया था । उसने उसे पकड़ लिया और उसकी पूंछ से मिट्टी के तेले में भिगोये सूखे पत्ते बांध दिये और फिर उन पत्तों को आग लगा दी । अपनी पूंछ में लगी आग को देखकर गधा घबरा गया और लगा अंधा-धुंध भागने । भागते-भागते वह राजा की गजशाला में जा घुसा जिससे वहां चारों ओर आग लग गयी ।

गजशाला में आग लग जाने से हाथी आग में फंस गये और लगे ज़ोरे-ज़ोर से चिंघाड़ने, और इधर-उधर भागने । उनके इधर-उधर भागने से लोग रौंदे जाने लगे,

(२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी)

जिससे चारों ओर चीखोपुकार शुरू हो गयी । खैर, सैनिकों ने किसी तरह हाथियों को काबू में किया और उन्हों पकड़कर बांध दिया । फिर गजशाला की आग भी बुझा दी गयी ।

गजशाला में आग लगने की खबर पाकर राजा काफी चिंतित हुआ । उसने चकित्सक को बुलवाया और घायल हाथियों की तुरंत मरहम-पट्टी करने का आदेश दिया । कुछ दिन तक मरहम-पट्टी होती रही, दूसरी दवाइयों का इस्तेमाल भी किया गया, पर हाथियों के घाव नहीं भरे ।

एक दिन राजा ने यों ही इस दुर्घटना का ज़िक्र राज-ज्योतिषी से किया और उसे यह भी बताया कि हाथियों के घाव भर ही नहीं रहे । राज-ज्योतिषी को तो, बस, इसी मौके का इंतज़ार था । उसने इसे हाथ से जाने न दिया और कौओं को खत्म करने की अपनी कसम को फिर याद किया । उसे खुशी हो रही थी कि अब कुछ ही दिनों में इनका सफाया हो जायेगा और इनकी जाति का कहीं नामो-निशान न रहेगा ।

उसने छूटते ही अपनी तुरुप चाल चली । "राजन्," वह बोला, "हाथियों के घाव भरने के लिए कौओं की चर्बी जरूरी है । मुझे ताज्जुब हो रहा है कि हमारे गजवैद्य को यह क्यों नहीं सूझा ।"

राजा को ज्योतिषी का सुझाव अच्छा लगा । कितना कारगर और सस्ता इलाज है यह । उसने डुग्गी पिटवाकर अपने समूचे राज्य में घोषणा करवा दी कि हर नागरिक से यह उम्मीद की जाती है कि वह एक कौआ मारे और उसकी चर्बी गजवैद्य तक पहुंचाये । बस, राज्य का हर नागरिक शिकारी बन गया, और चारों तरफ कौओं के सर पर मौत मंडराने लगी । कुछ ही दिनों में सैकड़ों हजारों की संख्या में कौए नष्ट हो गये ।
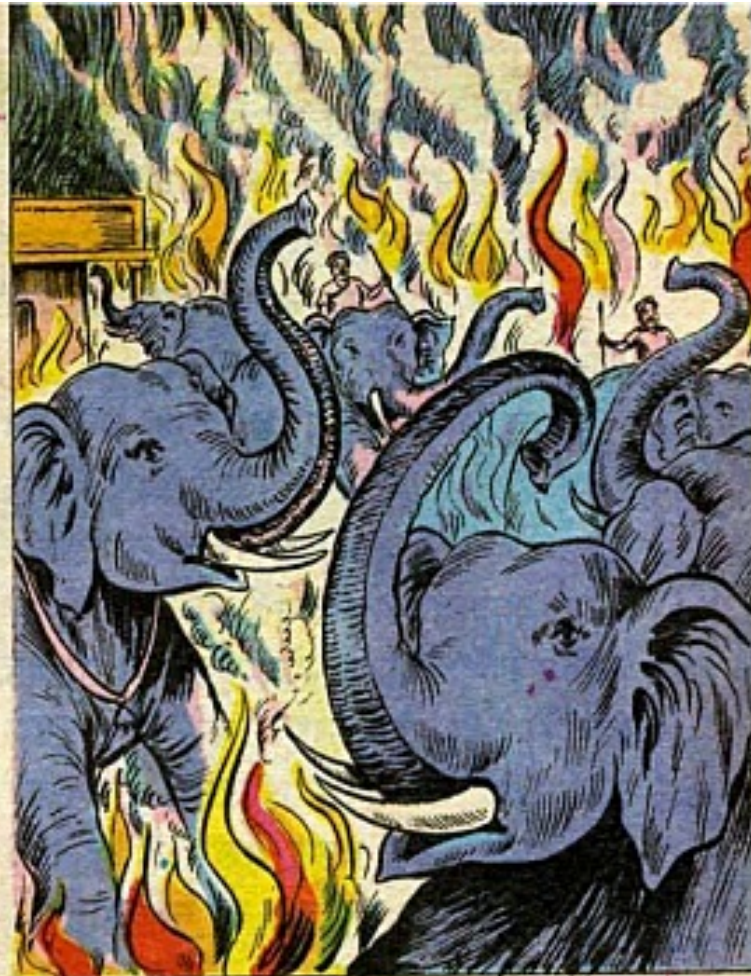
अवंती के राजा अनूप द्वारा क़िया जाने वाला यह अन्याय कौओं के राजा वायस राजा से सहा नहीं गया । उसने राजा से मिलने का निश्चय किया ।

एक दिन वह अपने महल से उड़ा और उड़कर राजा अनूप के महल में जा पहुंचा । उस समय वहां राज सभा चल रही थी । वह सीधा राजा के सिंहासन के पास जाकर

ही रुका । एक कौए को सिंहासन के पास बैठा देख सैनिक उस पर झपटे और उन्होंने उसे पकड़ने कि कोशिश की । राजा ने तुरंत उन्हें आदेश दिया कि वायस राजा को वहीं रहने दें और वे वहां से हट जायें ।

वायस राजा ने राजा अनूप का धन्यवाद किया और मानव वाणी में इस प्रकार बोलने लगा, "राजन्, आप मुझ पर खफा न हों । आप ध्यानपूर्वक मेरी बात सुनें । राजा को चाहिए कि जब उसे कोई मंत्रणा दे तो वह उस पर पूरी तरह विचार करे और उसके सभी पक्षों को परखे । उसके लिए यह सुनिश्चित करना बहुत ज़रूरी है कि ऐसी मंत्रणा से किसी का बुरा तो नहीं हो रहा, या यों ही किसी को कष्ट तो नहीं पहुंच रहा । आपके ज्योतिषी ने आपसे कहा कि कौओं की चर्बी से हाथियों के घाव भरेंगे । लेकिन क्या आप वास्तविकता जानते हैं? नहीं जानते हैं तो सुनिए—कौए के बदन में चर्बी होती ही नहीं । जिसने भी आपको यह सलाह दी है, दुष्टतावश दी है । इसके पीछे कोई और कारण रहा होगा ।"

वायस राजा की बात सुनकर राजा अनूप अचंभे में पड़ गया । उसने प्रश्न किया. "कौए के बदन में चर्बी न होने का क्या कारण है?"

"कारण?" वायस राजा बोला, "कारण स्पष्ट ही है । समूची मानव जाति कौए की शत्रु है । इसलिए अपनी जान को बचाने की खातिर वह हर समय इधर से उधर फुदकता या उड़ता रहता है । अब ऐसे जीव में चर्बी कहां से आयेगी?"

इस पर राजा अनूप को सच्चाई का पता चल गया । उसने आदेश दिया कि कौओं को मारना फौरन बंद किया जाये और राज-ज्योतिषी को सभा में पेश किया जाये ।

राज-ज्योतिषी जब राजा के सामने पेश हुआ तो उससे सबसे पहले उसका पद छीना गया । फिर धान्यागार के संरक्षक को आदेश दिया गया कि हर रोज पच्चीस बोरे अनाज कौओं को आहार के रूप में दिया जाये ।

प्रकृति : रूप अनेक

कंगारू की पूंछ

कंगारू एक स्तनपायी प्राणी है जो ऑस्ट्रेलिया में मिलता है । इसके पेट के पास एक थैली रहती है जिसमें यह अपने बच्चों को ढोता है । वास्तव में कंगारू न चलता है, न दौड़ता है, यह केवल उछलता है, और वह भी अपनी पूंछ के बल पर । बड़े-बड़े कंगारू ३० फुट, यानी ९ मीटर तक उछल सकते हैं । यह सारा कमाल इनकी पूंछ का है जिसकी लंबाई आम तौर पर ३.५ फुट होती है । यह पूंछ न केवल कंगारू को उछलने में, बल्कि उसे आगे धकेलने में भी सहायक होती है ।
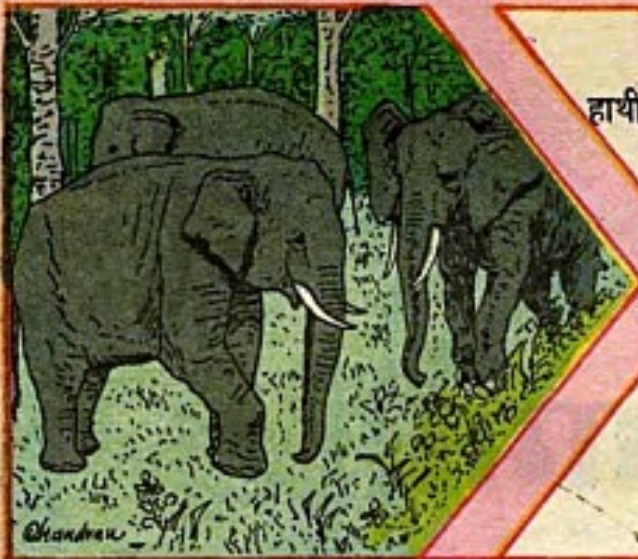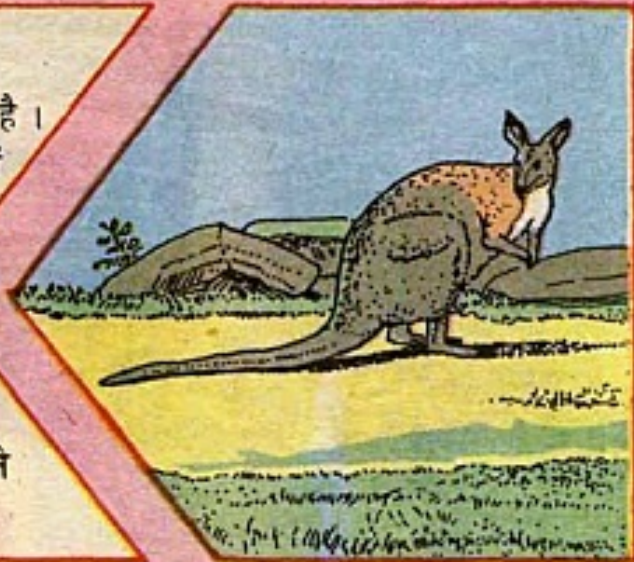
हाथी की सांकेतिक भाषा

हाथी आम तौर पर झुंडों में रहते हैं और झुंडों में ही घूमते-फिरते हैं । कुछ हाथी खास-खास जगहों पर खड़े होकर पहरेदार का काम करते हैं । जब कभी वे कोई खतरा देखते हैं तो उसकी सूचना देने के लिए वे अपनी सूंड ऊपर उठाकर विशेष प्रकार के संकेत भेजते हैं । झुंड में रहने वाले हाथी आधे मील की दूरी से भी ये संकेत आसानी से पकड़ लेते हैं और सावधान हो जाते हैं । वास्तव में ये संकेत इतनी दूरी तक कैसे पहुंच जाते हैं, आज तक यह आदमी की समझ से बाहर रहा है ।

साही के पर

साही एक चर्वक (कुतर कर खाने वाला) जीव है । इसके भूरे शरीर पर बहुत तीखे श्वेत-श्याम पर या कांटे रहते हैं । एक साधारण आकार के साही के शरीर पर ३० हजार से भी अधिक पर (कांटे) होते हैं । इसकी पूंछ के पर (कांटे) खोखले होते हैं जिन्हें पहले कलम के रूप में उपयोग में लाया जाता था। इनमें स्याही आसानी से भरी जा सकती है । खोखले पर साही को तैरने में भी सहायता देते हैं और उसे पानी में डूबने से बचाते हैं ।
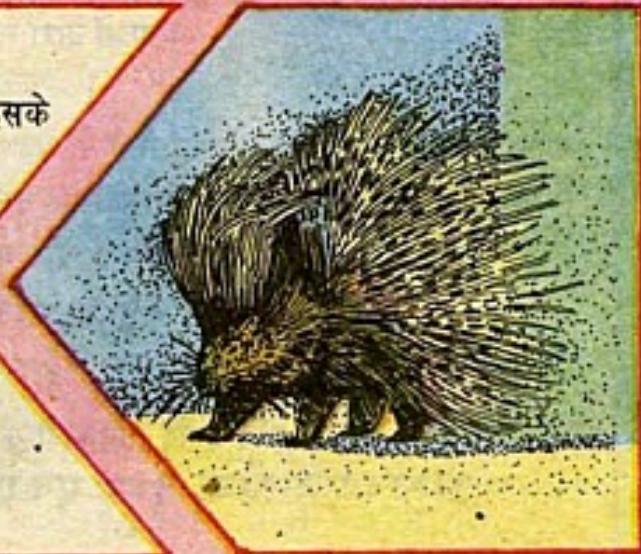
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

T. C. Jain

S. B. Prasad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० मार्च '९२ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जनवरी १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : दादी से सीखो!

द्वितीय फोटो : मिट्ठू को सिखाओ!!

प्रेषक : हरि, नोहर ट्रेडर्स, मानिकपुर-४९६ ५५४ (म.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. ५०/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
2. Periodicity of Publication	MONTHLY Ist of each calender month
3. Printer's Name	B.V. REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Prasad Process Private Limited 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
4. Publisher's Name	B.VISWANATHA REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Chandamama Publications 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
5. Editor's Name	B.NAGI REDDI
Nationality	INDIAN
Address	'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
6. Name and Address of individuals who own the paper	CHANDAMAMA PUBLICATIONS PARTNERS: 1. Sri B. VENKATRAMA REDDY 2. Sri B.V. NARESH REDDY 3. Sri B.V. SANJAY REDDY 4. Sri B.V. SHARATH REDDY 5. Smt. B. PADMAVATHI 6. Sri B.N. RAJESH REDDY 7. Smt. B. VASUNDHARA 8. Kum. B.L. ARCHANA 9. Kum. B.L. ARADHANA(Minor) (Minor admitted to the benefits of Partnership) 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026

I, B Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

2nd March 1992

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. 216.00

**फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए**

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. 216.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.